डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

संज्ञान, अधिगम और बाल विकास

(COGNITION LEARNING AND THE DEVELOPMENT OF CHILDREN)

(प्रश्न पत्र–11)

पूर्णांक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Objective)

इस कोर्स का उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना है। इस कोर्स की सहायता से शिक्षकों में शिक्षण अधिगम की समझ बनेगी और कक्षा में इसको उपयोग कर सकेंगे। यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षक अनुदेशक बनने की अपेक्षा अधिक से अधिक सहयोगी एंव सुविधादाता बनें।

एक और उद्देश्य यह है कि छात्रों में शोध विधि की समझ बनाना तथा बच्चों के बहु संदर्भों में इसे करके देखना।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives) –

1. छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना।
2. चिन्तन की प्रक्रिया को समझना। विभिन्न सिद्धांन्तों/परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से बच्चों में अधिगम को समझना, जो उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिबिम्बत हों।
3. विकास और सार्वभौमिक सस्कृति विभिन्न सिद्धान्त/परिप्रेक्ष्य के योगदान को संपूर्ण रूप से समझना।
4. बच्चों को ध्यान में रखकर सिद्धान्तों को लागू करना/छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना जिससे वे सिद्धांत और वास्तविक जीवन में बच्चों की अंतःक्रिया में संबंध स्थापित करें।
5. सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को समझना।
6. शिक्षा के सिद्धान्तों को समझते हुये छात्र–शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम करना।
7. उन कारकों की समझ बनाना जो सीखने में सुविधा प्रदान करते हैं।
9. सीखने के सिद्धान्तों को समझने के लिए छात्र शिक्षक को सक्षम बनाना और उन्हें पाठ्यक्रम नियोजन और पाठ्यक्रम अंतरण के लिए निहितार्थ करना।

छात्र–शिक्षक एक सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बच्चों के विकास और सीखने के लिए विभिन्न प्रविधियो की एक महत्वपूर्ण समझ विकसित करता है साथ ही इसमे सामाजिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथ–साथ, व्यवहारवाद का सिद्धान्त, संज्ञानात्मक विकास , सूचना प्रविधि आदि भी शामिल है।

इकाई के साथ विकास के प्रत्येक पहलू के महत्व को शामिल करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए इकाईयों के साथ–साथ भौतिक विकास, अनुभूति और भाषा विकास के लिए खेल, कला तथा कहानी कहने जैसी गतिविधियों को शामिल करने का सचेत प्रयास किया गया।

3. इकाईवार अंको का विभाजन–

क्र.	इकाई का नाम	अंक
1.	अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया	10
2.	बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया	15
3.	संज्ञान एवं अधिगम	20
4.	भाषा एवं सम्प्रेषण	15
5.	खेल, स्व एव नैतिक विकास	10
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई–1 अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया (Concept and process of Learning)

अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैग्ने का वर्गीकरण)

- **बच्चों के सीखने की प्रक्रिया** : अधिगम एंव स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति।
- **अधिगम एवं स्मृति** : स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति, अधिगम का हस्तांतरण व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ।
- अधिगम की कड़िनाईयों की अवधारणा एवं प्रकार।
- सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।

इकाई 2. बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया (Concept Formation and thinking childhood)

अवधारणा निर्माण :

- अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ।

- बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक।
- समय, स्थान, कार्य–कारण एवं स्वयं, की अवधारणाओं का विकास।
- अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल।
- पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धांत, पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार।

चिंतन एवं तर्क :

- चिंतन की अवधारणा एवं प्रकृति।
- चिंतन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिन्ह, सूत्र।
- चिंतन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ।
- चिंतन एवं अधिगम के बीच संबंध।

इकाई 3. संज्ञान एवं अधिगम (Cognition and Learning)

- **निर्माणवाद** : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएं एवं प्रक्रियायें, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वंद्व के लक्षण, शिक्षण अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व।
- **वायगोत्सकी का सिद्धान्त** : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता संबंधी नियम, जेडपीडी (ZPD) की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के संदर्भ में इसका महत्व।
- **सूचना संप्रेषण उपागम** : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान, कूटरचना (encoding) एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memori) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं।
- **संज्ञान में वैयक्तिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर** . अधिगम कठिनाईयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियां एवं प्रभाव।

इकाई 4. भाषा एवं सम्प्रेषण (Language and Communication)

- बच्चे किस तरह संप्रेषण करते हैं?
- भाषा विकास के संबंध में दृष्टिकोण : किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरुआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के संदर्भ में)
- प्रारंभिक आयु में भाषा।
- स्किनर का सक्रिय अनुबंध का सिद्धांत सामाजिक अधिगम के बारे में बन्डूरा और वाल्टर का सिद्धान्त।
- जन्मजातवादी – चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण।
- व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से इन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों की तुलना।
- भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना।

- भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अंतर, भाषायी विविधता, बहु सांस्कृतिक कक्षा के लिए इसका महत्व।
- द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए इसका महत्व– बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।

इकाई 5. खेल, स्व एवं नैतिक विकास (Play, Self and Moral Deveopment)

- खेल का अर्थ, विशिष्टतायें एवं प्रकार।
- **खेल एवं इसके कार्य** : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा व स्नायु विकास (motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव।
- खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (group dynamics) : खेलों के नियम, बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं।
- स्वयं का बोध; स्व–विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व–नियंत्रण।
- **नैतिक विकास** : इस संदर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन्स का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।

3. सत्रगत कार्य (Assignment)–
4. (Theme) थीम– बच्चों के संसार से क्या और कैसे–कैसे

- कुल घंटे– 25 (क्षेत्र पर + अभिलेख व्यवस्थापन और कक्षा कक्ष में चर्चा)

प्रोजेक्ट कार्य–1

- 4 से 7 आयु समूह के बच्चों को अलग–अलग थीम पर (चित्र) बनाकर देकर छात्र अध्यापक छात्रों से चयन करने को कहेंगे। बच्चों को खींचे गये चित्र पर बात करने को कहेंगे। छात्र कोशिश करेंगे और समझेंगे क्या चित्र है समाज में क्या बातचीत हो रही है और देखा जायेगा कि ड्राइंग के सांकेतिक विचार को बच्चा कैसे देख रहा है। छात्र अध्यापक एक पैटर्न बनाएंगे कि चित्रों को देखकर बच्चों में क्या विचार उभरते हैं। छात्राध्यापक अन्य तरह की गतिविधियां भी आयोजित कर सकते हैं। वह इस तरह की गतिविधियां कराते हुये बच्चों के जवाब के अभिलेख तैयार करेंगे।

प्रोजेक्ट कार्य–2 :

- 2 घंटे क्षेत्र पर लगाया गया समय/स्व अध्ययन 4 घंटे
- छात्र अध्यापक खेलते हुये बच्चों का अवलोकन करेंगे तथा अभिलेख रखेंगे। 2 घंटे में कम से कम 4 अवलोकन करेंगे। यह अवलोकन आस पड़ोस के खेल मैदान के हो सकते, स्कूल के भी हो सकते हैं। बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेल को छात्राध्यापक पहचानेंगे । खेल के दौरान बच्चों के व्यक्तिगत

और समूह के व्यवहार के अंतर्गत मित्रों के साथ और सामाजिक संबंध को देखेंगे। निम्नलिखित पहलुओं पर विश्लेषण करेंगे–

- गामक कौशल,
- खेलते समय उपयोग में लाई जाने वाली भाषा,
- समूह संरचना, अंतक्रिया नियम और उसका पालन,
- लिंगीय व्यवहार,
- समझौते का पैटर्न,
- संघर्ष करना,
- लोकगीत और खेल,
  यह सत्रगत कार्य पश्च सत्रगत कार्य का अनुसरण करेगा।
- संपर्क घंटे 6 (क्षेत्र पर + स्व अधिगम पर)

प्रोजेक्ट कार्य–3

- स्कूली बच्चों के आयु समूह के हिसाब से कोई प्रसिद्ध फिल्म या कार्टून छात्राध्यापक को छांटना होगा। छात्राध्यापक साक्षात्कार शेड्यूल बच्चों के लिये और अवलोकन चेक लिस्ट बनाएंगे। चेक लिस्ट के माध्यम से फिल्म में वह चीज देखी जायेगी जो अधिकांश बच्चों को आकर्षित करती है और विभिन्न पहलुओं पर समालोचनात्मक विश्लेषण करेंगे। बच्चों में क्षमता का पता लगाएं कि वे कल्पना और वास्तविक में अंतर कर सकते हैं? छात्राध्यापक को इससे अवसर देना होगा।
- **संपर्क 2 घंटे क्षेत्र पर + स्व–अध्ययन– 5 घंटे**

प्रोजेक्ट कार्य–4

- छात्राध्यापक को ऐसे वीडियो गेम का चयन करना है जो स्कूली बच्चों में ज्यादा लोकप्रिय हो। इसके लिये एक ऐसा साक्षात्कार सेड्यूल और अवलोकन चेक लिस्ट बनाये जो वीडियो गेम के आक्रामक बिन्दुओं को लेकर बनाया गया है। जिसे लेकर बच्चों को देखना पसंद हो ऐसे पहलू शामिल हो।
- संपर्क 2 घंटे (क्षेत्र पर) 5 घंटे स्व अध्ययन के लिये
- शिक्षण के लिए निर्देश – उपरोक्त प्रायोगिक कार्य हेतु योजना बनाना, विद्यार्थियों को जोड़ियां या समूह में कार्य आवंटित करना, अधिकतम स्थानीय संसाधनों एवं उपलब्ध आई सी टी का उपयोग कर शिक्षण एवं प्रगति का आकलन किया जाना है।

5. अंतरण की विधियाँ – (Mode of transaction)

- संप्रत्यात्मक समझ के लिये कक्षा में चर्चा करवाना
- पाठ्य सामग्री का गहन अध्ययन एवं पत्र लेखन करना।
- सत्रगत कार्यों संबंधित मुद्दे पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रस्तुतीकरण करना
- सैद्धान्तिक और प्रायोगिक गतिविधियां/अभ्यास/खोज,

- बाल अध्ययन की विधिया– अवलोकन, आंकडों का संग्रहण, शाला त्यागी संबंधी, एव विशिष्ट बालकों का अध्ययन।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा विनोद मंडल
- भटनागर, सुरेश (तृतीय सस्करण), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्ली: आर. एल. बुक डिपो
- भटनागर,वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर.एल. बुक डिपो
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनेविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- मगल, एस. के. (द्वितीय सस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा पी. एच. आई. लर्निंग पी. एल.
- माथुर एस. एस. (द्वितीय सस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- शर्मा, आर. (प्रथम सस्करण) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो
- शर्मा, वी. (पचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ. एस. पी. गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता
- गिजुभाई बधेका – प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा
- गिजुभाई बधेका – बाल शिक्षण जैसे मैंने समझा
- गिजुभाई बधेका – चलते – फिरते।
- Mind in Society - Lev Vygotsky (Published by Harvard university press)
- Educational Psychology o" Kelly
- Educational Psychology, S.K. Mangal
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियां)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष.

समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध

Understanding of Society, Education and Curriculum

(प्रश्न पत्र –12)

पूर्णांक –100

बाह्य अंक – 70

आंतरिक – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

भावी शिक्षकों के रूप में छात्राध्यापक को शिक्षा के मूल सिद्धांतों व अवधारणाओं की समझ बनाने की आवश्यकता होगी। यह प्रश्न पत्र छात्राध्यापक को शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे वे शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श व तथ्यों की पड़ताल कर सकें। वर्तमान समय की जरूरत है कि समाज व शिक्षा के अंतर्संबंधों को समझा जाये जिससे समाज में व्याप्त असमानता व संघर्ष के मुद्दों के साथ निपटा जा सके। न्याय, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा व विविधता को सम्बोधित किया जा सके। शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की जब हम एक दार्शनिक व ऐतिहासिक समझ बनाते हैं तो हमें शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के बीच का संबंध समझ में आता है।

भावी शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक, छात्राध्यापक को शिक्षा की मूल अवधारणाओं और सिद्धांतों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। यह पेपर भारत में शिक्षा के दार्शनिक, दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे छात्राध्यापक शिक्षा के मूलभूत सवालों पर विमर्श कर सकें। इसके माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की समझ विकसित हो सकेंगी।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व को समझना
- शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों की समझ विकसित करना।
- ज्ञान, शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बारे में लंबे समय से प्रचलित धारणाओं की पड़ताल करना और एक अर्थपूर्ण समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को अलग अलग तरह की विचारधारा व दृष्टिकोण से परिचित कराना जिससे वे एक सुरक्षित, समतावादी और सीखने सिखाने का एक अच्छा माहौल तैयार कर सकें।

शिक्षा की यह दार्शनिक, समाजशास्त्रीय व ऐतिहासिक समझ डी.एल.एड. के पूरे कोर्स के लिए एक ठोस पृष्ठभूमि तैयार करेगी । यह पृष्ठभूमि छात्राध्यापकों को मानवीय प्रवृत्ति, ज्ञान और सीखने की मूलभूत अवधारणाओं पर अलग–अलग दृष्टिकोण से समझ बनाने में मदद करेगा। इन सभी चीजों पर छात्राध्यापकों की एक समीक्षात्मक समझ बनेगी। यह कोर्स शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के अन्तर्संबंधों को प्रस्तुत करेगा। भारतीय शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर इन इकाइयों द्वारा छात्राध्यापकों को एक अर्थपूर्ण समझ बन सकेगी।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)	20 अंक
2	2	शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)	20 अंक
3	3	शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)	15 अंक
4	4	ज्ञान (Knowledge)	15 अंक
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई 1 : शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education)

- मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्व
- विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच संबंध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियाओं की जांच पड़ताल
- विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉन्टेसरी, गांधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो,
- मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ

इकाई 2 : शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

- शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य)
- सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए शिक्षा
- निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के संबंध में समझना
  - अ. सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बंटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता में असमानता और समानता
  - ब. समता
  - स. गुणवत्ता
  - द. अधिकार एवं कर्तव्य, शाला प्रबंध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका
  - ई. मानव एवं बाल अधिकार
  - फ. सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएं, मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका

इकाई 3 : शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society)

- ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा ।
- भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता में एवं उससे हटकर
- वर्ग, जाति, लिंग एवं धर्मों के संदर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका
- शिक्षा की राजनीतिक प्रकृति
- शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन

इकाई 4 : ज्ञान (Knowledge)

- बच्चे में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन करना
- ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना)
- मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा
- ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियायें
- पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड
- देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (NCF 2005)
- पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम
- बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन
- पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन

सत्रगत कार्य– कोई तीन

1. विद्यार्थियों में सामाजिक विकास और सामाजिक बदलाव में शिक्षक की भूमिका चिन्हांकित करना।
2. गतिविधियों एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन होता है इसे बच्चों के संदर्भ में वर्णित करना।
3. वर्तमान शिक्षा में राजनीति का हस्तक्षेप– एक चिन्तन पर अपने विचार लिखना।
4. विद्यालय स्तर पर निष्पक्षता और समानता के अवसरों की उपलब्धता पर एक रिर्पोट तैयार करें।

अंतरण की विधियां : (Mode of Transaction)

- समीक्षात्मक चिंतन व सवाल करना।
- संवाद और चर्चा।
- संगोष्ठियों/फिल्म, समूह कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, फील्ड वर्क, लेख/नीतियों एवं दस्तावेजों पर समीक्षात्मक चर्चा।
- इकाईयों को अंतर्सम्बंधित करते हुए शिक्षण कार्य।
- इकाईयों का अध्ययन कराते समय सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक संदर्भों का ध्यान रखा जाए।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- गिजू भाई बधेका (2001) – बाल शिक्षण और शिक्षक
- एस. शुक्ला एव कृष्ण कुमार –शिक्षा का समाज शास्त्रीय सदर्भ –ग्रंथ शिल्पी
- जॉन ड्यूई (2009) – स्कूल और समाज – आकार प्रकाशन, चडीगढ
- जे. कृष्ण मूर्ति (2006) – शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार कृष्ण मूर्ति फाउन्डेशन, वाराणसी
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (2004)– रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन – चेप्टर–1 एवं 7–ग्रंथ शिल्पी
- कृष्ण कुमार (2007) – शिक्षा और संस्कृति
- पाउलफेरे –उत्पीडितों का शिक्षा शास्त्र, ग्रंथ शिल्पी
- रोहित धनकर –शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन, चंडीगढ़
- एन.सी.ई.आर.टी–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : 1. शिक्षा के उपलक्ष्य 2. पाठ्यचर्या , पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें।
- छत्तीसगढ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – ज्ञान, शिक्षा क्रम एव शिक्षा शास्त्र चेप्टर– 2,5 एवं 6
- गिजुभाई बधेका– शिक्षकों से
- गिजुभाई बधेका– मॉनेसरी पद्धति
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Krishnamurti, J. (2006). *Krishnamurti on Education.* Part I: Talks to Students: Chapter 1: On Education, Chapter 4: On Freedom and Order, Part II: Discussion with Teachers: Chapter i: On Right Education. Chennai: Krishnamurti Foundation of India.
- Saxena, Sadhana (2007). 'Education of the Masses in India: A Critical Enquiry'. In Krishna Kumar and Joachim Oesterheld (Eds.) *Education and Social Change in South Asia.* New Delhi: Orient Longman.
- Thakur, R. (2004). *Ravindranath ka Shikshadarshan.* Chapter i: Tote ki Shiksha.Chapter 7: Aashram Shiksha, New Delhi: Granthshipli.

CDs/DVDs for Discussion

1. CIET/NCERT CD ROM *Four Educational Riddles* by Krishna Kumar
2. Debrata Roy *DVD,The Poet & The Mahatma*
3. Krishnamurthy Foundation India DVD *The Brain is Always Recording*
4. NCERT CD ROM *Battle For School* by Shanta Sinha
5. NCERT CD ROM *Globalisation and Education*
6. Sri Aurobindo Ashram Trust DVD *India and Her Future*

डी.एल.एड.द्वितीय वर्ष

शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे

Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education

(प्रश्न पत्र–13)

पूर्णांक –100

वाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देदश्य–(Rationale and Objective)

यह कोर्स विविधता, असमानता व शिक्षा के बीच के जटिल संबंधों के बारे में बात करता है। इसका उद्देश्य छात्राध्यापकों को जीवन के अनुभवों में व्याप्त विविधता और विभिन्न प्रकार के बच्चों के आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाना है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वंचित समुदाय से आने वाले बच्चों व लड़कियों को परंपरागत रूप से शिक्षा के विमर्श के हासिए पर धकेला गया है। आज समावेशी शिक्षा को जिस तरह से समझा जा रहा है उसमें इन सभी को स्थान गिलना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आलोक में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के लेंस से शिक्षा को देखने के बाद यह कोर्स समावेशी शिक्षा की प्रकृति और इसे कक्षा में लागू करने के लिए शिक्षक के लिए आवश्यक संवेदनशीलता और कौशलों के बारे में भी बात करता है।

यह कोर्स शिक्षा में उभरे नए दृष्टिकोणों के अध्ययन की बात करता है। आज सारे विश्व में विशेष आवश्यकता वाले बच्चें को मुख्य धारा की शिक्षा में सहभागी बनाने, उन्हें सामान्य विकास के लिए तैयार करने और साहस के साथ जीवन का सामना करने के लिए तैयार करने की दृष्टि से समावेशी शिक्षा को प्रचारित करने की आवश्यकता को तीव्रता से महसूस किया जा रहा है। आज शिक्षक कक्षा में इस तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है जिसके चलते वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की जरूरतों को समझने और तदनुरूप उनकी सीखने की प्रक्रियाओं को सहज बनाने में असफल रहते हैं। यही बात वंचित तबकों से आने वाले बच्चों, अनुसूचित जाति व जनजाति व लड़के एवं लड़कियां की विविध आवश्यकताओं के संदर्भ में भी लागू होती है। शिक्षक अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलकर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आप में पेशेवर क्षमताएँ विकसित करें इसकी सख्त आवश्यकता है।

समाज में हर स्तर पर व्याप्त अन्याय व भेदभाव को संबोधित करने के लिए जेंडर के सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करना भी शिक्षा में अपेक्षित है। इसके लिए शिक्षाशात्रीय तरीकों के साथ–साथ सिद्धांतों व वास्तविक जीवन के बीच संबंध स्थापित करना आवश्यक है जिससे महिलाओं के प्रति सम्मान व जेंडर समानता को सुनिश्चित किया जा सके। समाज व बच्चों में बढ़ती हिंसा व ध्रुवीकरण की चिंता का एक और बड़ा विषय है जो समाज में बढ़ते तनाव का परिणाम है। कक्षा प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में मूल्य और जीवन कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है जिससे वे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और चुनौतियों का सामना कर सकें तथा स्वयं व दूसरों के लिए सम्मान महसूस करते हुए शांतिपूर्ण समाज की स्थापना में योगदान दे सकें।

साथ ही आज की व्यावसायिक व प्रतियोगी जीवनशैली द्वारा उत्पन्न पारिस्थितिकीय विषमताओं से निपटने के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों के मितव्ययी उपयोग के प्रति जागरूक करना होगा। इस तरह से आज के उभरते शैक्षिक दृष्टिकोणों के साथ जुड़ाव शिक्षकों को शिक्षा के संदर्भ को समझने तथा इच्छित पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र को विकसित करने में मदद करेगी तथा व्यक्तिगत व संस्थागत रूप से परितर्वन के वाहक के रूप मे काम करने के योग्य बनाएगा।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- समावेशी शिक्षा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना
- सीखने में पाठ्यचर्या, शाला संगठन और शिक्षण उपागम में मौजूद भेदभावपूर्ण रवैया कैसे बाधा बनता है समझना।
- स्कूल की संरचना/व्यवस्था (अंतर्निहित व स्पष्ट) किस प्रकार से सभी बच्चों को समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में बाधक है उसे समझना।
- भारतीय कक्षा में असमानता व विविधता को सम्बोधित करने के लिए ऐसी पाठ्यचर्या व शिक्षणशास्त्र तैयार करना जो सभी बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हों।
- पाठ्यचर्या और उसको लागू करने में जीवन कौशल और मूल्यों को सम्मलित करने की आवश्यकता को समझना।
- स्थानीय व वैश्विक वातावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना जिससे अपने भीतर, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य बन सके।
- समाज में मौजूद जेंडर असमानता की समीक्षात्मक समझ बनाना।
- शाला में जेंडर असमानता कैसे फलती फूलती है उसे समझना और जेंडर समानता लाने में शिक्षा की भूमिका को समझना।

3. इकाई अध्ययन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	अंक
1	समावेशी शिक्षा	22
2	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे	25
3	जेण्डर स्कूल एवं समाज	23
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई 1. समावेशी शिक्षा Inclusive Education

- भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)।
- समावेशी शिक्षा का अर्थ।
- भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार।
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।

इकाई 2. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे Children with Special Needs

- विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक व समकालीन दृष्टिकोण।
- अधिगम कठिनाईयों के प्रकार।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम व कौशल।

इकाई 3. जेण्डर स्कूल एवं समाज (Gender, School and Society)

- पुरुषत्व व स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना।
- पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं व पहचानों के साथ अंतर्क्रिया।
- स्कूल में जेण्डर पहचान को पुनः उभारना पाठचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा प्रक्रियायें एवं विद्यार्थी– अध्यापक बातचीत।
- कक्षा में जेण्डर समानता के लिए काम करना।

सत्रगत कार्य – कोई तीन

1. अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्तावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तेयार कीजिए।
2. अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाईयों को सूचीबद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए।
3. अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाईए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपादेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।
4. अपने क्षेत्र में विशेष निःशक्तता के प्रकार, प्रकृति कारण तथा रोकथाम के प्रयास पर आलेख तैयार कीजिए।
5. अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहें प्रयास लिखिए।
6. किसी भी कक्षा की सामाजिक विज्ञान/भाषा की पाठ्यपुस्तक में समावेशिता तथा जेन्डर के मुद्दों का विश्लेषण कीजिए।

7. समावेशी शिक्षण के लिए स्कूल में बाधक तत्वों की पहचान करना और सकारात्मक वातावरण निर्माण के लिए सुझाव देना।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

1. शालेय प्रक्रियाओं में जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेशण तथा बहिष्करण की स्थितियों का अवलोकन करवाना।
2. शैक्षिक भ्रमण – बालिका छात्रावासों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाए जा रहे केन्द्रों का भ्रमण, बच्चों के साथ बातचीत करवाना।
3. समाज में जेण्डर सम्बधित मुद्दों के उदाहरण द्वारा प्रशिक्षणार्थी को संवेदनशील बनाना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ की सूची

- मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा शिक्षक मार्गदर्शिका ।
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2001) आधार, भोपाल, राज्य शिक्षा केन्द्र
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र
- अग्रवाल गीता (1981) विकलागंता समस्या और समाधान, निधि प्रकाशन दिल्ली
- भार्गव, महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेन– देयर एजुकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- भार्गव, महेश (2004) विशिष्ट बालक, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- मिश्र, विनोद कुमार (2003) विकलांगों के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद, जाटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली
- जोसेफ, आर.ए. (2003) विकलांगता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- जोसेफ, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुर्नवास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- बन्टी शर्मा, आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Bhattacharjee, Nandini (1999). Through the looking-glass: Gender Socialisation in a Primary School in T. S. Saraswathi (ed.) *Culture, Socialization and Human Development: Theory, Research and Applications in India.* Sage: New Delhi.
- Ghai, Anita (2008). Gender and Inclusive education at all levels In Ved Prakash & K.
- Kumar, Krishna (1988). *What is Worth Teaching?* New Delhi: Orient Longman. Chapter 6: Growing up Male. 81-88. Singh, Renu (2009), The wrongs in the Right to Education Bill, *The Times of India,* 5 July.

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास

(School culture, leadership and teacher development)

(प्रश्न पत्र–14)

पूर्णांक –100
वाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन– 30

औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Objective)

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के लिए आनन्दमयी और सार्थक वातावरण प्रदान करना है। शिक्षा के विचार और इसके क्रियान्वयन के बीच लम्बा फासला होता है, जिसके लिए कई महत्वपूर्ण घटक कार्य करते हैं। इनमें शिक्षक, अभिभावक, शाला प्रमुख, जिला एवं विकास खण्ड अधिकारी, शिक्षाविद्, समुदाय, नीति निर्धारक और बच्चे शामिल है।

स्कूलों की संरचना किस प्रकार होती है? गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सरकारी अधिकारी क्या भूमिका निभाते हैं? किस तरह का नेतृत्व प्रभावी स्कूली शिक्षा को सुनिश्चित कर सकता है? शैक्षिक मापदण्ड किस तरह से निर्धारित एवं व्याख्यायित किए जाते हैं? शिक्षा में बदलाव किन प्रक्रिया से सुनिश्चित किया जा सकता है? यह पाठ्यक्रम इस पहेली के इन सारे टुकड़ों को एक साथ लेकर आता है जो प्रभावी स्कूली शिक्षा की संरचना करते हैं। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कार्यशालाओं, परिचर्चाओं, आलेखों और जमीनी अनुभवों पर आधारित प्रायोजना कार्य करने और उनके प्रस्तुतीकरण द्वारा छात्राध्यापक विद्यालय की संरचना एवं प्रबंधन को प्रभावी बनाने वाले घटकों की समझ विकसित कर सकेंगे।

सम्पूर्ण विश्व में शैक्षिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। नई सहस्त्राब्दी शुरु होते ही कई समुदायो ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, और इन सुधारों में शिक्षकों का पेशेवर विकास एक महत्वपूर्ण घटक है। आज वैश्विक स्तर पर यह माना जा रहा है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण है अर्थात शिक्षक को अपने विषय के शिक्षण के साथ–साथ समाज में सुधार के लिए भी कार्य करना है। इस दोहरी जिम्मेदारी के चलते शिक्षकों के पेशेवर विकास का क्षेत्र बड़ा चुनौतीपूर्ण और ध्यान आकर्षित करने वाला बन गया है। इस नए प्रयास का शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा भी स्वागत किया गया है।

चूंकि इसके द्वारा शिक्षकों का पेशेवर विकास सुनिश्चित होता है साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना भी मिलती हैं।

शिक्षकों का पेशेवर विकास एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें शिक्षक–शिक्षा, शिक्षक–प्रशिक्षण तथा वे अन्य सभी प्रयास आते हैं जो शिक्षक की योग्यता बढ़ाने में मदद करते हैं। शिक्षकों का क्षमतावर्धन जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षक बनने से लेकर सेवानिवृति तक चलती रहती है। यह पाठ्यक्रम सेवापूर्व शिक्षा के रूप में शिक्षकों की सतत तैयारी के प्रतिरूप को समझने में मदद करेगा, साथ ही उन शैक्षिक अनुभवों को भी

समझने में मदद करेगा जो शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रियाओं और एक पेशेवर के रूप में उसकी कार्य प्रक्रियाओं को बेहतर बनाते हैं।

यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को शिक्षक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं और सहयोगी संस्थाओं की भूमिका और योगदान को समालोचनात्मक रूप से जाँच करने के भी अवसर प्रदान करेगा।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)–

इस पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्राध्यापकों को स्कूली शिक्षा को गठित करने वाले सभी मुद्दों एवं घटकों की विस्तृत समझ को निर्मित कर पाना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- छात्राध्यापकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराना।
- शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में स्कूल की संरचना और प्रबंधन के विचार को स्पष्ट रूप से समझने में छात्राध्यापकों की सहायता करना।
- किसी स्कूल की प्रभावशीलता के विशिष्ट सन्दर्भों को समझने में मदद करना।
- शालेय नेतृत्व एवं प्रबंधन में बदलाव की समझ को विकसित करने में मदद करना।
- शैक्षिक नेतृत्व, बदलाव के घटक और व्यावहारिक परियोजना कार्यों के बीच के संबंधों को पहचान पाने में छात्राध्यापकों की मदद करना।

यह पाठ्यक्रम शिक्षा प्रणाली की अवधारणा, उसके कार्य करने के तरीके शालेय प्रणाली में विभिन्न स्तरों की भूमिका और कार्य को समझने तथा शालेय पाठ्यक्रम से इनके संबंधों को स्थापित कर पाने तथा कक्षा की प्रक्रियाओं पर इन सबके प्रभाव को समझ पाने में छात्राध्यापकों की मदद करेगा।

इकाईयां

क्रमांक	इकाई	विषय	टंक
1	1	भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रिया (Structure and process of the Indian Education System)	15 अंक
2	2	शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड (School effectiveness and school standards)	15 अंक
3	3	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन (School Leadership and Management)	15 अंक
4	4	शिक्षा में बदलाव –सुगमता (Change Facilitation in Education)	10 अंक
5	5	शिक्षक विकास की समझ (Understanding Teacher Development)	15 अंक
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई–1 भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाएँ
Structure and processes of the Indian Education System

- विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार।
- शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही।
- शाला और सहयोगी संगठनों के मध्य संबंध।
- शालेय प्रबंधन को प्रभावित करने वाली शिक्षा नीतियों की समझ और व्याख्या।
- शालेय संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन क्या है? शालेय संस्कृति निर्माण में शालेय गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, वार्षिक उत्सव इत्यादि की क्या भूमिका है?

इकाई–2 शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड
School effectiveness and school standards

- शालेय प्रभावशीलता; क्या है, इसको कैसे मापेंगे?
- शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकास।
- कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक।
- समावेशित शिक्षा की पाठ–योजना, कक्षा–व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा।
- कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु–प्रज्ञता स्तर।

इकाई–3 शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन
School Leadership and Management

- प्रशासनिक नेतृत्व।
- समूह नेतृत्व।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व।
- परिवर्तन के लिए नेतृत्व।
- बदलाव प्रबंधन।

इकाई–4 शिक्षा में बदलाव–सुगमता

Change facilitation in Education

- सर्वशिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव।
- शिक्षा में समानता।
- बालिका शिक्षा–प्रोत्साहन और योजनाएँ।
- शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे।
- शिक्षा में परिवर्तन–तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।

इकाई–5 शिक्षक विकास की समझ

Understanding Teacher Development

- शिक्षक–विकास, शिक्षक–शिक्षा और शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा।
- शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबंधन एवं समुदाय पर प्रभाव।
- भारत मे शिक्षक–शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय।
- वैश्विक परिदृश्य मे शिक्षक शिक्षा का परिवर्तित होता स्वरूप।
- पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा : अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र (Scope)।
- शिक्षक–शिक्षा प्रणाली के विषय मे विभिन्न आयोगो और समितियों की अनुशंसाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक–शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव।
- IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य।
- UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।

सत्रगत कार्य (Assingment) कोई तीन

इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक कार्य इस तरह से निर्धारित किया गया है, जो छात्राध्यापकों को कक्षा की चर्चाएँ और वास्तविक जमीनी अनुभवों (कक्षा शिक्षण) के बीच सम्बन्ध स्थापित करने और बदलाव के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं को समझ पाने में सहायता करें।

1. विद्यालय की संस्कृति और संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए कम से कम दो शालाओं में आयोजित होने वाली गतिविधियों का अवलोकन एवं रिर्पोट प्रस्तुत करना।
2. बालिका शिक्षा के लिए शासकीय प्रयास और उन प्रयासों का विद्यालय स्तर पर लागू करने की स्थिति का आकलन करते हुए रिर्पोट बनाए।
3. सर्वशिक्षा अभियान से शालेय शिक्षा में आये परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।
4. शाला और उनके सहयोगी संगठन के मध्य आपसी सम्बधों से शाला प्रबंधन का प्रभाव– एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
5. एक आदर्श विद्यालय के मापदण्ड क्या होना चाहिए? आलेख तैयार करें।
6. नेतृत्व बदलते ही प्रबंधन का बदलाव पर अपने अनुभव के आधार पर रिर्पोट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ Mode of Transaction

- चुने गए आलेखों को ध्यान से पढना और उन पर चर्चा करना।
- शालेय प्रक्रियाओं का अवलोकन करना और उनके दस्तावेज तैयार करना।
- शैक्षिक भ्रमण : नवाचार केन्द्रों व विविध प्रकारों के स्कूलों का भ्रमण।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मजूमदार, एस. – अधोसंरचना एवं शिक्षा प्रशासन
2. बत्रा, एस. (2003)– शालेय सहयोग के लिए शाला निरीक्षण
3. आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन (2005)
4. लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012)– हिन्दी अंक 4 स्कूल नेतृत्व अजीम प्रेमजी विश्व विद्यालय प्रकाशन
5. मुखोपाध्याय, मर्मर– शिक्षा में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन ।
6. शिक्षा में नये आयाम – प्रकाशक राज्य शिक्षक प्रशिक्षक मण्डल म.प्र. भोपाल संस्करण (1993)
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

Proficiency in English
(D.El.Ed Second year)
Question Paper-15

Maximum Marks : 50

External : 25

Internal : 25

(Rationale and Aim) – This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student -teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Specific Objectives

- To strengthen English language proficiency of the student teacher.
- To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
- To enable students to link this with pedagogy.
- to re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

This Course will attempt to use a variety of resources, takes and activites to enable the student-teacher to develop/increase her proficiency in English. The Focus will not be on learning and memorising aspects of grammer and pure linguistics. Instead, the aim will be to enjoy learning English and to constantly reflect on this learning to link it with pedagogical strategies.

Unit-wise division of marks

Unit S.No.	Unit Name	Total
1	Status of English in India	3
2	Listening & Speaking	5
3	Reading	5
4	Writing	5
5	Vocabulary & Grammar	7
	Internal	25
	Total	50

The theory paper will comprise of the five units-

Unit 1- Status of English in India

- English around us
- English as associated official language in multicultural India.
- English as second/foreign language

Unit 2- Listening & Speaking.

- Listening with comprehensive – simple instructions, public enhancements telephone convesation, radio/TV.
- Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role-play, interaction radio instruction (IRI) programms
- Using role play, drama, story telling, poems, and songs as a pedagogical tool.
- Listining to oral discourses (speech, discussion, news, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)
- Producing oral discusses (speech, discussion, news sport, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)

Unit 3- Reading.

- Skills of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading about silent reading.
- Reading for global and local comprehension.

- Critical reading – process postultes and stratigres.

Unit 4- Writing

Writing text and identifying their features. Texts may include discriptions, conversation, narratives, biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notices, adverts, prochures etc.

- Editing text written by one self and others.
- Error analysis

Unit 5- Vocabulary & Grammar

- Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms.
- Word formation enrichment of vocabulary abbreviation
- Type of sentences (simple, complex and compound)
- Classification of clases based on structure and function
- Voice, narration.

Assignment

The internal assessment will be done on the following two sub-sections-

A. **Suggested Activities for Active learning**. -Any two

- Group discussions
- Talk for learning
- Speech, Debate
- Short Essay
- Organising listening and speaking activities.
- Giving and asking for feedback during or after oral discusses like speech, discussions, news reports, sports commentary, interviews etc)
- Rhymes, songs, stories, poems, role-play and dramatization
- Reading different types of texts
- Organising reading activities like reaching clubs, speed reading competitions
- Writing individually and refining through collaboration
- Comerting one form of text into another eg a narrative text into dialogue, paraphrasing
- Writing different indings to stories
- Re-teling a story from a different characters perspective
- Reading passages and analyzing the distribution of type of sentences
- Developing a short essay in collaboration
- Arranging jumpled sentences in proper sequence

B. Suggested ICT activities. Any-2

- Writing in a digital format (Text or document file)
- Short digital presentation
- Searching internet for specific information
- Download and transfer to smart phone any three audio clips of speeches, discussions, interviews etc.
- Search for websites that support listening and speaking
- Search for articles on different reading strategies.
- Search and download short videos on various reading activities as competitions.
- Search for websites which provide free or open source content such as storus, palms, play etc.
- Download and format for printing atleast three varities of writing texts (eg prose, poetry, drama etc)
- Downloading atleast one vocabulary games in a smart phone/tab
- Searching websites which promote grammar activities
- Searching websites which promote vocabulary activities
- Preparing digital presentation of a language game

Mode of transaction

The teaching would be done -

(a) Group work

(b) Work shop

(c) Seminar & actual classroom teaching.

Referances

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework,2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER in Vedio)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

योग शिक्षा

Yoga Education

(प्रश्नपत्र–16)

पूर्णांक–50

सैद्धान्तिक–25

प्रायोगिक–25

1- औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

आज मानव के ज्ञान में अपार वृद्धि के साथ–साथ तीव्र गति से अनेकानेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे है। आधुनिक विज्ञान तथा प्रायोगिकी ने जीवन के पहलु का प्रभावित किया है। वैज्ञानिकों ने प्रकृति के सूक्ष्मतम रहस्य को जानने में सफलता प्राप्त कर ली है। आज व्यक्ति के पास अनेकानेक सुख सुविधाओं के साधन उपलब्ध है, लेकिन दुःख की वात यह है कि धीरे–धीरे स्वास्थ्य खोता जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ा मानसिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य होता है । यह सब उत्तम हो इसके लिए शरीर का संचालन जरूरी है। योग से तन के साथ मन भी स्वस्थ होता है।

डी.एल.एड के पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये। जिससे वच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्दण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य वन सके।

विशिष्ट उद्देश्य (Specifice Objective)

1- छात्राध्यापकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।

2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।

3. युवाओ की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरूकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।

4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।

5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।

6. आदर्श सामाजिक कौशल एव ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।

8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।

9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों का व्यवहार मे लाना।

10. पतंजलि, अरविन्दो व भागवद् गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तर्दृष्टि विकसित करना।

11. योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना।

12. योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अर्न्तदृष्टि प्राप्त करना।

इकाईवार अंकों का विभाजन

सरल क्र.	इकाई का नाम	टंक
1	योगाभ्यास के सिद्धांत	7
2	प्राणायाम	8
3	बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियायें	5
4	भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान	5
	आंतरिक अंक	25
	कुल अंक	50

इकाई 1 – योगाभ्यास के सिद्धांत

आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियाँ, आसनों का वर्गीकरण– ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्यनमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियाँ एवं लाभ।

इकाई 2 – प्राणायाम

प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, गुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) उपप्राण– नाग, कूर्म कृंकल, देवदत्त, धनन्जय) प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियाँ।

इकाई 3 बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियायें

बंध का अर्थ, प्रकार लाभ (जालंधर बंध, उड़िडयान बंध एवं मूलबंध)

मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा)

शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियाँ (धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभॉति)

इकाई 4 – भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान

महर्षि वशिष्ठ, महर्षि पतंजलि, आदिशंकरार्चाय, गुरू गौरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी शिवानन्द, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।

सत्रगत कार्य (Assignment)- कोई तीन

योग अभ्यास और गतिविधियाँ

1. अपने साथियों के समूह को प्राणायाम का अभ्यास कराना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
2. योगाभ्यास करने वाले व्यक्तियों का सर्वेक्षण करना और उनसे प्रश्नावली के माध्यम से एक रिपोर्ट तैयार करना।
3. ध्यान की किसी एक विधि को सीखना उसका अभ्यास करना। पन्द्रह दिन बाद अपने अनुभवों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4. किन्हीं तीन विद्यालयों का भ्रमण कर, शालेय योग प्रतियोगिता पर रिपोर्ट तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ (Mode Of Transaction)

1. अवलोकन एवं अनुकरण द्वारा
2. विभिन्न योग केन्द्रों का भ्रमण
3. योग पर आधारित साहित्य का समूह में वाचन एवं संवाद

सुझावात्मक संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पातञ्जलि योग प्रदीप स्वामी ओमकारानन्द गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम – आचार्य उदयवीर शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञ्जल योग सार – डॉ. साधना, दीनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।
7. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण
(पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिए)
Pedagogy of Environmental Studies
(for Early Primary and Primary)
(प्रश्न पत्र – 17)

पूर्णांक –100
बाह्य मूल्यांकन – 70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य –(Rationale and Aim)

पर्यावरण अध्ययन चारों ओर के व्यापक व स्थानीय परिवेश के प्राकृतिक, मानवीय, सामाजिक व सांस्कृतिक आयामों को खुद से अन्वेषण व पड़ताल कर समझने पर जोर देता है। ये विविध कौशलों के द्वारा सक्रिय रूप से सीखने– सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ने का माहौल प्रदान करने व समीक्षात्मक व जिम्मेदार प्रवृत्ति विकसित करने के अवसर देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और बाद में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 एवं 2005 व आंध्रप्रदेश के विज्ञान के पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2011 ने पर्यावरण अध्ययन को विशेष महत्व देते हुए शालेय शिक्षा में शामिल करके इस विषय को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्राथमिक शिक्षा में विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं पर्यावरणीय शिक्षा से मिलकर बने एक समग्र क्षेत्र को पर्यावरण अध्ययन के रूप में परिकल्पित किया गया है, और यह बालकेन्द्रित है।

इस कोर्स का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा में वर्तमान चुनौतियों से जूझने के लिए छात्राध्यापकों को विषय की प्रकृति व विषयवस्तु के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पहलुओं में दक्ष किया जा सके। पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करने वाले शिक्षकों को इस तरह तैयार करना कि वे विषय के दार्शनिक एवं ज्ञान मीमांसीय (expistemological) आधार समझते हुये इस विषय से जुड़ी विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान, एवं पर्यावरणीय अध्ययन की अवधारणाओं को कक्षा शिक्षण के दौरान सिखा सकें। कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक इन विषयों की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक समझ स्वयं प्राप्त करते हुये अपनी पाठ्ययोजनों का स्वरूप इस तरह से तैयार करेंगे कि उसमें बच्चों के विचारों को, अनुभवों को एवं उनकी भागीदारी को बढ़ाने के पर्याप्त अवसर होंगे। यह कोर्स यह अवसर देगा कि छात्राध्यापक उन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए भी तैयार रहेंगे जिसमें यह छात्र–छात्राओं के अवधारणाओं संबंधी भ्रम एवं उनकी परिवेशीय समस्याओं की पहचान करते हुए उन्हें दूर करने की समझ बनायेंगे एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की ओर अग्रसर कर सकेंगे।

यह पाठ्यक्रम बाल विकास विषय के साथ मिलकर यह समझने में मदद करेगा कि बच्चे अपने भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के प्रति गहरी समझ किस तरह विकसित करते हैं एवं यह अंतःदृष्टि उनकी कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाएगी।

इस कोर्स का उददेश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो पर्यावरण अध्ययन के दार्शनिक व ज्ञान मिमांसीय आधारों को समझ सके और इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा के समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप मे समझ सके। पर्यावरण अध्ययन पाठयक्रम मे बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को कक्षा मे लाने के लिए पर्याप्त मौके भी उपलब्ध कराए गये है। गतिविधियों से सीखने के अनुभवों को स्थान देने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए है। बच्चों को केन्द्र मे मानकर चलने वाली इस व्यवस्था मे आकलन को लेकर भी समझ मे काफी बदलाव आए है और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि छात्राध्यापक इन बदलावों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ एवं गतिविधियाँ कराने के लिये तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब तक मार्गदर्शक के रूप मे देखा जा रहा है जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछ कर अपने अनुभवों से कुछ नया जोडकर या ऐसे ही किसी और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया मे सहयोग करेंगे।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- छात्राध्यापक को पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र को समझने एव पाठ्यचर्या के विभिन्न दृष्टिकोण को आत्मसात करने मे मदद करना।
- छात्राध्यापक एक सुविधादाता के रूप में बच्चों से विज्ञान व पर्यावरण से सबधित जिज्ञासाओं पर सवाल करना तथा इस विषय में चर्चा करने के लिए प्रेरित करना।
- करके सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5 तक) की कक्षायोजना पाठयोजना का विकास करना।
- छात्राध्यापकों को पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपयुक्त–बालकेन्द्रित, अनुभव और गतिविधि आधारित तरीकों के लिए तैयार करना जिसमें शिक्षण बालकेन्द्रित, अनुभव, गतिविधि आधारित हो और जिससे पर्यावरण अध्ययन के कौशलों व दक्षताओं का विकास हो सके।
- छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति के आधार पर विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिए तैयार करना।

3. इकाई अध्ययन–

सरल क्र.	इकाई का नाम	टंक
1	पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ	10
2	बच्चों के विचारों को समझना	15
3	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन	15
4	पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी	10
5	पाठ्यपस्तक एवं शिक्षण विधियां	10
6	कक्षा योजना एवं मूल्यांकन	10
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई 1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ (Concept of EVS)

पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के संदर्भ में इसका विकासक्रम।

- एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ।
- पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, "प्राशिका" कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में "एकलव्य" का नवाचारी प्रयोग), एन सी एफ (NCF) 2000, एन सी एफ (NCF) 2005।

इकाई 2 : बच्चों के विचारों को समझना (Understanding Children's Ideas)

- प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएं ।
- बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियां।
- स्थान और समय की अवधारणा ।
- पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन)।
- पाठ्यपुस्तकों सहित पाठचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Sets) की समीक्षा (विश्लेषण)।

इकाई 3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन
(Teaching of EVS and Assessment)

- पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रियाएं : प्रक्रिया कौशल–सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण,समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आंकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग।
- नक्शा व चित्र में अंतर करना, नक्शा पढ़ना।
- पूछताछ के तरीके : गतिविधियां, परियर्चा, समूह कार्य,भ्रमण, सर्वेक्षण, प्रयोग आदि।
- बच्चों के विचार व उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना।
- कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका।
- पर्यावरण अध्ययन – भाषा और गणित का एकीकरण।
- कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग।
- आंकलन एवं मूल्यांकन– परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- आंकलन की विभिन्न विधियां एवं भविष्य में अधिगम के लिए आकलन का उपयोग

इकाई 4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी (Planning for Teaching EVS)

- योजना को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता।
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के कुछ उदाहरण।
- बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना।

- अवधारणा चित्र एवं थीमेटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)।
- इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग।
- संसाधन इकट्ठा करना।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग।
- दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री।
- प्रयोगशाला / विज्ञान किट।
- पुस्तकालय।
- सहपाठी समूह अधिगम (बच्चों की आपसी बातचीत) का उपयोग।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियां (Textbooks and Pedagogy)

पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के संदर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्त: सामाजिक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ

- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियां– बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सुविधादाता (Facilitator) के रूप में शिक्षक
- इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन
- अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड
- प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- चिंतनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ
- मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, सीसीई (CCE)
- चिंतनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आंकलन, अधिगम का आंकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर

सत्रगत कार्य

पाठयोजना निर्माण–पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी।

- **Inter disciplinary, Multi diciplinary approach** पर आधारित पाठयोजनाएँ
- ए.एल.एम. आधारित –पाठयोजनाएँ
- समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ, इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।
- इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव इादि।
- पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना– ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर।
- आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण – जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि।
- अध्यापन अभ्यास के दौरान स्टडी – सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/ उद्दंड बालक।
- पाठ्यपुस्तक विश्लेषण – किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण ।
- स्थानीय स्त्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।
- किन्हीं दो बच्चों का पर्यावरण अध्ययन में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की रिर्पोट तैयार करना।
- किसी एक कक्षा के लिए पर्यावरण विषय पर पाँच चिन्तनशील प्रश्न तैयार करना।

अंतरण की विधियां

- गतिविधिपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हुए आसपास के परिवेश के उदाहरण एवं समस्याओं पर कक्षा में चर्चा एवं स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाना।
- रांस्थान गें वर्कशाप, सेगीनार आयोजित करके छोटे छोटे सागूह कार्य कराए जा राकते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, समाचार पत्रिका का लेखन, क्षेत्र भ्रमण की रिपोर्ट का निर्माण आदि।
- छात्राध्यापको के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद एवं क्षमता संर्वधन के लिए वाद–विवाद,परिचर्गा, ड्राइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण , गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना जैसे– पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूकता हेतु– वादविवाद।
- अपशिष्ट के प्रकार एवं प्रबंधन –प्रोजक्ट कार्य।
- प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण एवं नियंत्रण– सर्वे।
- भोज्य पदार्थो का स्वास्थ्यवर्धक संयोजन– चार्ट निर्माण, प्रश्नोत्तरी।
- कुपोषित बालक एवं सीखने की गति – केस स्टडी।
- फसलें / कृषि हेतु मिट्टी–पानी आदि अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ– भ्रमण, सर्वे।
- प्राकृतिक आपदाएँ एवं जागरूकता– फिल्म, विडियो क्लिपिंग।
- अम्लीय वर्षा ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव– निबंध, वाद–विवाद ।

- सांस्कृतिक पर्यावरण – एकांकी, नृत्यनाटिका।
- पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षाविदों / समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों के योगदान – तात्कालिक भाषण, चर्चा।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथों की सूची

- पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर)
- दिगन्तर जयपुर का साहित्य
- एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य संगति, एवेही एवंकस मुंबई
- एनसीईआरटी (2007) एन्वायरमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड Class-III-V नई दिल्ली
- एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली
- पर्यावरणीय अध्ययन– ए.वी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)
- विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.वी. सक्सेना (रीजनल कालेज, भोपाल)
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण – प्रो. शर्मा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

सामाजिक विज्ञान शिक्षण

Pedagogy of Social Science

(वैकल्पिक –प्रश्न पत्र–18)

पूर्णांक –100

बाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

औचित्य एवं उद्देश्य (Relationale and Aim)

सामाजिक विज्ञान विषयों का शिक्षण उच्च प्राथमिक कक्षाओं से प्रारम्भ होकर दसवीं कक्षा तक किया जाता है। इसे एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। यह विषय अन्य विषयों से भिन्न है क्योंकि इसके अन्तर्गत हम न केवल समाज का वैज्ञानिक तरीकों से अध्ययन करते हैं, बल्कि एक आदर्श सामाजिक संस्था को परिकल्पित करते हैं। वास्तव में, सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत आधुनिक समाज का पुनरावलोकन हमें सामाजिक परिघटनाओं को समझने और नये समाज की स्थापना करने के रास्ते ढूंढने में मदद करता है। इस विषय की प्रकृति भविष्य के समाज की कल्पना से जुड़ी है। अतः इसके शिक्षण में विविध प्रकार के सामाजिक दखल भी शामिल किये जाते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि इस विषय के द्वारा छात्राध्यापक किसी समाज के निर्माण में इन दखलों की भूमिका को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम में छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान की विशेषताओं को समझने के साथ इतिहास, भूगोल, सामाजिक आर्थिक और सामाजिक राजनीतिक जीवन की प्रकृति को भी समझ सकेंगे। स्कूली स्तर पर सामाजिक विज्ञान में क्या पढ़ाया जाना चाहिए, और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, इस पर पर्याप्त शोध और विमर्श हुए हैं, जिनको छात्राध्यापकों को जानना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के कक्षा शिक्षण के अनुभव और उनसे मिली सीख भी अध्ययन का विषय है।

छात्राध्यापकों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तक की अवधारणा से परिचित होने के लिए अन्य सन्दर्भ सामग्रियों का भी उपयोग करें। जिससे वे पाठ्यपुस्तकों और उनकी अवधारणाओं से परिचित सकें।

सामाजिक अध्ययन विषय में बच्चों का आकलन करना कठिन है, क्योंकि बच्चों से अपेक्षा है कि वे पाठ के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को याद करके बताने के बजाय अपने अनुभव, विचार व धारणाओं को प्रस्तुत करें। इस समय में मूल्यांकन के क्या उपाय और प्रक्रिया होगी, को भी इस पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

एक स्कूली विषय के रूप में सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु उसकी प्रकृति और उद्देश्यों पर आधारित होती है। यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापकों को विषयवस्तु के विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित कराता है। इसे प्राकृतिक और दिया गया समझने के बजाय यह छात्राध्यापकों को इन विषयों के विभिन्न

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में इन विषयों की समझ परिलक्षित होती है। यह पूछना और सुझाता है कि किस प्रकार सामाजिक विज्ञान हमारे आसपास के समाज और सामाजिक वास्तविकताओं को समय, स्थान, संस्थानों, प्रक्रियाओं आदि की समालोचनात्मक समझ विकसित करता है।

इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र के विविध दृष्टिकोण इस कोर्स का आधार बने हैं जिससे यह समझा जा सके कि यह विषय अलग–अलग तरीकों से समझा जा सकता है और इसके उद्देश्य ऐतिहासिक व सामाजिक होते हैं। पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण छात्राध्यापकों को यह समझने में मदद कर सकता है कि किस तरह समाज, बच्चे व सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण इन दस्तावेजों को किस तरह आकार देते हैं वे इनका अंतरण किस तरह से किया जाता है। बच्चे सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को किस तरह ग्रहण करते हैं, व पाठ्यपुस्तकों की विधियाँ इस प्रक्रिया में सहायक होती है या बाधक बनती है इस पर चिंतन करने से छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान के दृष्टिकोण और शिक्षणशास्त्र के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)–

- इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के आधार पर समाज को समीक्षात्मक रूप से समझने और विश्लेषण करने का ज्ञान कौशल विकसित करना।
- आंकड़े एकत्र करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कौशल विकसित करना।
- सामाजिक विज्ञान के स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्लेषण करना।
- पाठ्यक्रम के अंतरण के लिए इस तरह की विधियों को जानना और उपयोग करना जो बच्चों में सामाजिक घटनाओं में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा समाज व सामाजिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को समीक्षात्मक व विचारात्मक दृष्टि से व्यक्त करने की क्षमताएं विकसित कर सके।
- स्वतंत्रता, समानता व न्याय के मानवीय व संवैधानिक मूल्यों को समझकर विभिन्नता और विविधता का सम्मान कर सकें और समाज में उनके लिए मौजूद चुनौतियों को समझ सकें।

इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जिन्हें सामाजिक विज्ञान के दार्शनिक व ज्ञानमीमांशीय आधारों को समझ सकें ओर इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को सीन उदेने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। इस पेपर में विज्ञान व सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु को शामिल किया गया है। इस पेपर में छात्राध्यापकों को यह अवसर मिलेगा कि वे बच्चों के विचारों को समझने के साथ–साथ अपनी धारणाओं व पूर्वाग्रहों को भी परख सकें व अच्छी समझ की ओर बढ़ सकें।

अध्ययन की इकाइयाँ

सरल क्र.	इकाई का नाम	vad
1	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	10
2	सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें	15
3	बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां	15
4	शिक्षण शास्त्र एवं आकलन	10
5	पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ	10
6	कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन	10
	आंतरिक	30
	कुल योग	100

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक संदर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के संबंध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी/सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के संबंध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केंद्रित, मुद्दा केंद्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अर्न्तविषयक सामाजिक विज्ञान।

इकाई 2 : सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें

बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय संबंधी दृष्टिकोण एवं कालक्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक–स्थानिक अंर्तक्रिया :–

1. समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण समुदाय एवं समूह
2. सभ्यता : इतिहास, संस्कृति
3. राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र–राज्य एवं नागरिक
4. क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग
5. बाजार : विनिमय

इकाई 3 बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां :

बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में माध्यमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के संदर्भ में इन कारकों का महत्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अर्न्तक्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिए समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण–अधिगम सामग्री, विषय के संबंध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते

हैं, इसे समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, कहानियों/आख्यानों, संवाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं का अवलोकन।

इकाई 4 : शिक्षण शास्त्र एवं आकलन

शिक्षण विधियां : सामाजिक विज्ञान में अनुमान/खोज पद्धति, प्रॉजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना, अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आंकड़े, इसके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अंतर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिंतन के लिए निजी/प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्याकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।

इकाई 5 : पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ

- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियां–बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सूत्रधार के रूप में शिक्षक।
- इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ।
- अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक।
- सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन।

इकाई 6 : कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन

- शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना
- योजना का मूल्यांकन
- आकलन और मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता और महत्व
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

सत्रगत कार्य (Assignment)- (कोई तीन)

- प्रामाणिकता की दृष्टि से किसी ऐतिहासिक फिल्म/धारावाहिक या उपन्यास की समीक्षा। प्रामाणिकता के आकलन के लिए फिल्मों, किताबों, अखबारों के आलेख, प्रदर्शनियों और संग्रहालयों जैसे स्रोतों का उपयोग। "तथ्यों" की जटिल प्रकृति, उसके गठन और "मत" से उसके अंतरों को समझना।
- किसी स्थान को अपने शिक्षण संस्थानों से दूरी और दिशा के संदर्भ में नक्शे में अंकित करना। नक्शे ऐतिहासिक स्थलों, बैंकों, अन्य संस्थानों, स्थानीय बाजार एवं रुचि के अन्य स्थानों को अंकित करें। स्थानीय इतिहास की जानकारी लेने एवं उस जगह की खासियत जानने के लिए वहां के रहवासी एवं अन्य लोगों से बातचीत भी करें। उस जगह पर स्थित विविध संस्थानों के बीच के संबंधों को भी देखने समझने की कोशिश करें।
- वर्ष 1950 के एवं आजकल की कुछ पुस्तकें, फिल्में, कार्टून्स, पत्रिकायें, जर्नल्स इकट्ठा करें। किसी आम व्यक्ति से संबंधित मुद्दों को निकालने के लिए सावधानीपूर्वक उनका अध्ययन करें। उन बदलावों

को रेखांकित करें जो किसी आम व्यक्ति के सरोकारों और जिन्दगी में देखे जा सकते हैं। क्या इन बदलावों के पीछे के कारण, हमारे देश की अर्थव्यवस्था, राजनीति, इतिहास और सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों में तलाशे जा सकते हैं? अपनी समझ को रिपोर्ट/कविता/कोलाज/आख्यान/नाटक या अन्य किसी माध्यम में, जिसमें आप चाहें, प्रस्तुत करें।

- फील्ड विजिट के माध्यम से किसी झुग्गी बस्ती के बारे में उसकी अर्थव्यवस्था, गुजर बसर, राजनीति एवं ऐतिहासिक स्मृतियों के अर्थ में समझ बनायें। उनकी वर्तमान चिंताओं और समस्याओं की प्रकृति को समझने के लिए इन कारकों के बीच संबंध बनायें।
- किन्हीं दो उत्पादों के बारे में उनके कच्चा माल से लेकर अंतिम रूप तक की जानकारी खंगालें। उसे अंतिम व उपयोग लायक स्थिति तक लाने के लिए जो प्रक्रियायें होती हैं उनका अध्ययन करें। इस बात का अध्ययन करें कि किस तरह भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और इतिहास के विविध कारकों ने इन प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। इस बात को भी देखें कि उनके बीच क्या अंतर्संबंध हैं।
- किसी विशिष्ट सामाजिक विज्ञान विषय, घटना, तिथि या स्थिति के इर्द–गिर्द एक मौखिक इतिहास प्रस्तुत करने का प्रॉजेक्ट बनायें। साक्षात्कार और बातचीत के माध्यम से लोगों के विचारों और मतों को समझें और उन्हें जगह व सम्मान दें। इन विवरणों को अन्य स्त्रातों से तुलना करके उनकी विश्वसनीयता का विश्लेषण करें। इस प्रॉजेक्ट का उपयोग, इतिहास के बारे में उपलब्ध बहुल मतों को समझने में करें। साथ ही इस बात को भी समझें कि कैसे कुछ मत, दूसरे अन्य मतों को दरकिनार कर हावी हो जाते हैं।
- लोगों के पास होने वाले विभिन्न प्रकार के वाहनों का विश्लेषण कर किसी समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों का अध्ययन करें। जेण्डर एवं सामाजिक–आर्थिक मापदण्ड से इसके संबंधों की पडताल कीजिए। समुदाय की परिवहन संबंधी जरूरतों में समय के साथ आये बदलावों को चिन्हित कीजिए। ऐतिहासिक नजरिये से दिखाई देने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करें। साथ ही परिवहन के विविध प्रकारों के आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का भी आकलन कीजिए।
- देखें कि किस तरह कार्टून्स, टिकट, मुद्रा, अखबार, पत्रिकायें, डॉक्युमेन्टरीज, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, धारावाहिक, उपन्यास एवं इसी तरह की तमाम चीजें, सामाजिक विज्ञान शिक्षण में उपयोग होती है।
- किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन एवं सुझावात्मक समाधान।
- अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझावात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर/मस्जिद,/चर्च/गुरूद्वारा इत्यादि।
- सामाजिक विज्ञान के किसी विषयांश को लेकर तिथि एवं घटनाओं के आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करना। अन्य स्त्रोतों से इन तथ्यों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता ।
- सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में डाक टिकट, मुद्रा, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, डाक्यूमेन्ट्री, नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, सीरियल किस प्रकार उपयोगी है, खोजकर स्पष्ट करना।
- पाठ्य पुस्तक समीक्षा– भौतिक स्वरूप, वर्तनी, चित्र एवं मानचित्र, अवधारणात्मक बिन्दु आदि।
- प्रश्न पत्र का विश्लेषण।

अंतरण की विधियां (Mode of Transction)

1. चर्चा विधि का उपयोग करते हुए
2. कार्यशालाओं में विशेष सामाजिक संदर्भों पर वार्तालाप कराना
3. योग भ्रमण द्वारा

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल
- सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी– एस.सी.ई.आर.टी.
- एस.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
- राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Batra, P. (ed.)(2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges, New Delhi: Sage.
- Chakravarty, U. (2006). Everyday Lives, Everyday Histories: Beyond the Kings and Brahmanas of 'Ancient' India', New Delhi: Tulika Books, Chapter on: History as Practice: Introduction, 16-30.
- George, A. and Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative. New Delhi: Sage.
- Kumar, K. (1996). Learning From Conflict. Delhi: Orient Longman, pp.25-41, 79-80.
- NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of Social Sciences. New Delhi: NCERT, 1-19.
- Eklavya (1994). Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog, Hoshangabad: Eklavya.
- Jain, M. (2005). Social Studies and Civics: Past and Present in the Curriculum, Economic and Political Weekly, 60(19), 1939-1942.
- NCERT Social Science Textbooks for Classes VI-VIII, New Delhi : NCERT.
- Social Science Textbooks for Casses VI-VIII, Madhya Pradesh: Eklavya.

Pedagogy of English

Second year

(Upper Primary- Optional paper)

(Optional-Question paper 18)

Maximum Marks : 100

External : 70

Internal : 30

(Rationale and Aim)

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is to give an expouses of ongoing updated method of ELT to the student teacher. The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student - teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Unit -wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Total
1.	Approaches to Teaching of English	15
2.	Pedagogical implication of SLA Theories	10
3.	Process and Planning	10
4.	Curriculum and resource material	15
5.	Classroom transaction process	10
6.	CCEAssessment	10
	Internal Mark	30
	Total	100

Unit 1- Approaches and methods to teaching of English.

- Active Learning Methods
- Congnitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners.
- Teaching mutigrade classess multilevel classess.
- Socio- Psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration)
- From knowledge based approach to skill based approach.

Unit 2 - Pedagogical Implications of SLA Theories.

- Second language acquisition theories
- Interaction in second language in classroom, from theory to practice
- the pedagogy of reading.
- Discourse oriented pedagogy

Unit 3- Process and Planning.

- Characteristics of a good teaching plan
- Different processes of teaching proses, poetry, grammar.
- Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborats, Evaluate), and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recite, review, reflection)

Unit 4- Curriculum and resource material:

- NCF-05 Chapter 3 3.2.2- Curriculum , 3.3.1 The curriculum at different stages
- NCF-05 Chapter 3 3.1.1- Language education 3.1.2 Home/ first/ Language or mother tongue, 3.1.3 Second Language acquisition.
- NCF-05 Chapter 7 7.3- Curriculum studies; knowledge and curriculum
- Position Paper on Language.

Unit 5- Classroom transaction process

- Role of 'talk' in the classroom to make the class more interactive.
- Development of vocabulary through pictures, flow- charts and language game.
- Dealing with textual exercises (Vocabulary, Grammar, study skills, projectwork)

Unit-6 Assessment

- CCE-Concept and procedure: Implications of Assessment- for the learner, for the Teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record; informal feedback from the teachers; measuring progress; using portfolio for subjective assessment,
- Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE
- Attitude towords errors and mistakes in second language learning.

Mode of Transaction

The teaching would be done -

(a) Group work
(b) Work shop
(c) Seminar
(d) Actual classroom teaching.

Assignment

- Reading Passages and analyzing the distribution of linguistic elements.
- Making generalization on syntactic and morphological properties.
- checking the generalizations and editing them individually and also through collaboration, feedback.
- critical reading of spacific areas of grammar as discussed in a few popular grammar books and reaching at conclusions.
- Survey, interview
- Group discussion on advantages of learner-centered-approach.
- Search and download steps of action research
- Prepare strategies for addressing the problems of low proficient learners
- Publishing children's products (School Magzines)
- Prepare digital presentation on recent developments in technology and language learning.
- observe open Education resource (OER) lessons on second language acquisition. Comment critically.
- Prepare teaching- learning material; low cost, no cost, using the classroom as a resource
- Prepare teaching learning- planning on prose lesson given in the text book of upper primary classes.
- Searching and downloading videos from internet on planning for teaching
- Download any grammar app
- Prepare learning outcomes on the bassis of resource material (NCF-05 Chapter 3-3.1.1-Language education)
- Review text book of English of class VIII
- Search and download NCF-05. Position Paper
- Select at least 25 vocab items from any English text book- find their pronunciation online.
- Prepare a series of dialogue on Need of English language in today scenerio and present them
- Make pictures, charts and daily routine activites using vocalbulary given in text book of class VI and present them in the class room.
- Download videos of good classroom practices

- Prepare question papers of English for class VI, VII, VIII for summative assessment of students.
- Make a digital presentation on CCE describing formative and summative assessment
- Present the above presentation in school programme.

Essential Readings

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework, 2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi. Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly, M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एव वीडियो)

डी.एल.एड. – द्वितीय वर्ष
गणित शिक्षण
(कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)
Pedagogy of Mathematices
(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

पूर्णांक – 100
बाह्य मूल्यांकन –70
आंतरिक मूल्यांकन – 30

औचित्य का उद्देश्य (Relationale and Aim)

प्राथमिक स्तर पर बच्चे यह सीखते हैं कि उन्हें अपनी आस–पास की दुनिया में कार्यों को करने के लिए गणितीय ज्ञान का व्यवस्थित उपयोग किस तरह करना चाहिए। इसी समय बच्चे गणितीय ज्ञान के प्रतीकात्मक स्वरूप के संपर्क में आते हैं और यह सीखते हैं कि गणित में अवधारणाओं और प्रक्रियाओं के बीच किस तरह संबंध बनाया जाता है। गणितीय ज्ञान के अधिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि बच्चे कुछ महत्वपूर्ण आयामों जैसे– अमूर्त चिंतन व सामान्यीकरण, तर्क करने के गणितीय तरीकों, संकेतों/प्रतीकों के प्रयोग की आवश्यकता आदि के बारे में जाने। समस्या समाधान के गणितीय तरीके स्थानिक संबंध व सूचनाओं से सार ग्रहण करना सीखना भी उनके लिए आवश्यक है।

यह पाठ्यचर्या गणित के मूलभूत क्षेत्रों यथा– बीजगणित, ज्यामिति व आंकड़ों के प्रबंधन को देखने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि, कौशलों के विकास और संवेदनशीलता में अभिवृद्धि के प्रयास करता है।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिए अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
- बीजगणितीय चिंतन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना।
- ज्यामितीय अवधारणाओं की समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं संबंधित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं।
- भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित संप्रेषित करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना।
- भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिंतन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें संप्रेषित के तरीकों में समर्थ हों।

इकाईवार अंको का विभाजन–

सरल क्र.	इकाई	विषय	अंक
1.	1.	गणितीय तर्क	15
2.	2.	बीजगणित चिंतन	10
3.	3.	व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन	10
4.	4.	स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना	15
5.	5.	गणित को सम्प्रेषित करना	10
6.	6.	गणित में आकलन से सम्बन्धित मुददे	10
		आंतरिक अंक	30
		कुल योग	100

इकाई 1 : गणितीय तर्क

सामान्यीकरण की प्रक्रियायें, पैटर्न पहिचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (inductive reasoning) प्रक्रिया।

- गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorems)
- गणितीय कथनों (statements) की वैधता जाँचने की प्रक्रिया : उत्पत्ति (proof), प्रति–उदाहरण, अनुमान (Conjecture)
- गणित में समस्या समाधान– एक प्रक्रिया
- गणित मे रचनात्मक चिंतन

इकाई 2 : बीजगणित चिंतन

- अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न
- क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relations)
- चरों (variables) का प्रयोग–कब और क्यों।
- सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना।
- बीजगणितीय चिंतन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली।

इकाई 3 : व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन

- आंकड़ों का इकट्ठा करना, उनका वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करना।
- संग्रहित आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण।
- प्रारंभिक सांख्यिकीय तकनीक।
- रेलवे समय सारिणी सहित अन्य समय सारिणी बनाना।
- प्रतिशत।
- अनुपात और समानुपात।
- ब्याज।
- बट्टा / छूट (Discount)

इकाई 4 : स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना

- ज्यामितीय चिंतन के स्तर– वान हील (Van Hieles)
- सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ–ज्यामितीय शब्दावली।
- समरूपता और समानता (Congruency and similarity)।
- रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ।
- ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।

इकाई 5 : गणित को सम्प्रेषित करना

- पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ।
- गणित के शिक्षण– अधिगम की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका।
- गणित प्रयोगशाला/संसाधन कक्ष।
- छात्रों को उनके कार्यों में हुई गलतियों के बारे में फीडबैक देना।
- गणित से डर और असफलता से पार पाना।

इकाई 6 : गणित में आकलन से सम्बन्धित मुद्दे

- मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (open ended questions) और समस्याएं।
- अवधारणात्मक समझ के लिए आकलन।
- सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिए आकलन।
- गणितीय विचार को समझाने के लिए उदाहरणों एवं अन्य–उदाहरणों का प्रयोग

- तर्क के परिपेक्ष्य मे पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण
- गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अवबोध के विकास पर स्पष्टता

सत्रगत कार्य (Assignment)

1. कम्पास यंत्र (ज्यामिति बाक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग।
2. गोला, शंकु,बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना।
3. किसी एक कक्षा में विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार संबंधी आकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञात करना।
4. गणित पैटर्न
5. कागज को मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनक शिक्षण में उपयोग।
6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितिय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।
   a. $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$
   b. $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$
   c. $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$
7. π के सत्यापन मॉडल तैयार करना।
8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग।
9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग।
10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण मे उपयोग।
11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना।
12. ज्यामिति अवधारणाओं के सत्यापन हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

- गणितीय ज्ञान के प्रति बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसकी समझ हासिल करने के लिए भावी शिक्षकों को बच्चों द्वारा किए गए काम के अवलोकन पर आधारित चर्चा में बच्चों को शामिल करना चाहिए।
- गणित की विभिन्न अवधारणाओं के बीच जुड़ाव और सम्बन्धों को समझने के लिए भावी शिक्षकों को समूह में अवधारणात्मक खाका (concept maps) बनाना चाहिए। जिससे समूह कार्य के महत्व को आत्मसात किया जा सके।
- उठाए गए मुद्दों के नजरिये से सिद्धान्त को समझने के लिए पाठ्य वस्तु (जैसा कि चर्चा के रूप में सुझाव दिया गया है) को संवाद के साथ पढना चाहिए।

- गणित के ज्ञान के ऐतिहासिक उदाहरणों को विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से एकत्र करना और उस पर अपनी राय व्यक्त करना।
- गणितीय मॉडल (विशेषकर ज्यामिति से संबंधित) बनाना।
- प्रस्तुति के माध्यम से शिक्षण–अधिगम की सामग्रियों को आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।
2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल
3. गणित अध्ययन –सत्संगी एवं दयाल
4. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित
5. Position paper National focus Group on teaching of mathematics
6. NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर
7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
8. वैदिक गणित –स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ
9. वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा
10. मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा
11. राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका?
12. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

विषय : विज्ञान शिक्षण

Pedagogy of Science

(वैकल्पिक प्रश्न पत्र – 18)

पूर्णांक –100

वाह्य मूल्यांकन – 70

आंतरिक मूल्यांकन – 30

1. औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale and Aim)

इस पाठ्यक्रम का उददेश्य छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ का विकास कर, गलत धारणाओं को चुनौती देने हेतु तैयार करना है एवं उन्हें विज्ञान की प्रकृति से अवगत कराना है। इससे वे विभिन्न पहलुओ के संवध में अपने विचारों को निर्भय होकर व्यक्त कर सकेंगे एव विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ स्थापित कर उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास कर सकेंगे। छात्राध्यापकों को ज्वलत मुद्दों पर सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने योग्य बनाना तथा जो उनके शिक्षण में परिलक्षित हो सके।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific objectives)

- छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओ की समझ विकसित करना ।
- छात्राध्यापकों को विज्ञान की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना।
- छात्राध्यापकों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ एवं उनके संज्ञानात्मक विकास करने योग्य बनाना।
- छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण एवं आकलन हेतु रणनीति निर्माण करने की समझ विकसित करना।

3. इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन	10 अंक
2	2	विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचारों को समझना	15 अंक
3	3	सभी के लिए विज्ञान (Science for all)	15 अंक
4	4	पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियों का संज्ञान	15 अंक
5	5	कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन	15 अंक
		आंतरिक अंक	30 अंक
		कुल योग	100 अंक

इकाई : 1 विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन (Recapetulation of Concepts of Science)

➢ कक्षा 1 से 8 तक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों का विज्ञान से संबंध स्थापित करना।

- जंग क्यों लगती है?
- बादल कैसे बनते है?
- मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है?
- वनस्पति और जंतु अपना भोजन कैसे करते हैं?
- वनस्पतियों तथा जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है।
- पवन चक्की कैसे कार्य करती है।
- बल्ब कैसे प्रकाश देता है।

इन सब प्रश्नों के लिए छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करेंगे तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक–अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें इस बात पर चिंतन करेंगे, जाँच करने के लिए निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया, इन अभ्यासों को करवाते समय शिक्षक–अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।

इकाई–2 विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचार समझना। **(To Know what is science and understand the scientific thoughts, idea of children)**

- विज्ञान की प्रकृति– अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद
- विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में संबंध
- वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग
- वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार
- विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन विश्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।

इकाई–3 : सभी के लिए विज्ञान (Science for all)

- विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता संबंधी मुद्दे; सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका।
- जन सामान्य तथा खेती के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार।
- हरित क्रांति और टिकाऊ खेती की विधियां।
- सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव।
- अनेक प्रजातियों के लुप्तप्रायः होने के कारण।

- स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएं एवं निराकरण।
- साहित्य सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोकसुनवाई एवं किसानों से बातें तथा क्षेत्र एवं विशेषज्ञों से संबंधित अन्य मुद्दे।

इकाई–4 : पाठ्यपुस्तक एवम् शिक्षण विधियों का संज्ञान (Cognition of teaching methods and text book)

- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार
- विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियां अन्तर्क्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियां, सुविधादाता के रूप में शिक्षक
- प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ
- शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक।
- विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।

इकाई–5 : कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)

- विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परता; कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्याकन।
- योजना का मूल्याकन
- आकलन एवं मूल्यांकन परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), अधिगम का आंकलन, अधिगम के लिए आकलन, रचनात्मक आकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी प्रतिपुष्टपोषण प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन

सत्रगत कार्य (Assignment)

- अपने आसपास होने वाली वैज्ञानिक घटनाओं का अवलोकन करते हुए उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करना एवं अभिलेख बनाना।
- विज्ञान से संबंधित प्रोजेक्ट कार्य
- प्रयोगों के आधारित एक पाठयोजना बनाना।
- विज्ञान के प्रादर्श निर्माण
- विज्ञान की पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का महत्व

- वर्तमान में किसी एक कृषि समस्या को पहचानना उसके वैज्ञानिक कारण को जानते हुए समाधान पर आधारित अभिलेख तैयार करना।

अंतरण की विधियाँ **(Mode of Transaction)**

- विभिन्न संदर्भों में सामान्य प्रयोग एवं अन्वेषण अयोजित करना
- वैज्ञानिक लेख, वैज्ञानिक भ्रमण, प्रोजेक्ट कार्य, विज्ञान संग्रहालय एवं विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- अवलोकन के अवसर प्रदान करना, समूह चर्चा, क्विज, पोर्टफोलियों घटना–प्रधान अवलोकन (एनेक्डाटल), बच्चों द्वारा अप्रत्याशित प्रश्न, पेपर पेंसिल परीक्षण आदि का उपयोग करना
- इकाईवार रचनावादी निर्माणवादी उपागम आधारित पाठयोजना निर्माण करवाना।
- किताब, फिल्म, मल्टी मीडिया पैकेज जैसी शिक्षण सामग्री की सहायता से अध्यापन ।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- मध्यप्रदेश में संचालित कक्षा 1 से 8 तक की विज्ञान विषय की पुस्तकें
- विज्ञान कक्षा 1 से 8 की विषय की NCERT द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तकें
- बाल वैज्ञानिक कक्षा 6,7 एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल
- स्मॉल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7 एवं 8 पाठ्य पुस्तकें 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई
- प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें । सी ई ई की किताबें ।
- सक्सेना, ए. बी. 2011 निर्माणवाद विज्ञान कक्षा ।
- ALM शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेड्राक
- विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- NCERT(2005). Focus group paper on Science Education, Position Paper. New Delhi.
- Rampal, A. (1993). School science in search of a democratic order? In Kumar, K. (Ed.) Democracy and Education in India, New Delhi: NMML.
- Bal Vigyanik, Text books for Science, Class VI-VIII. Madhya Pradesh: Eklavya.
- Down to Earth,Centre for Science and Environment.
- NCERT, (2005). Syllabus for Classes at the Elementrary Level. Vol. I, New Delhi: NCERT.
- NCERT.(2008). Text books for Science, Class VI-VIII. New Delhi: NCERT. TEhelka Magazine.
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

द्वितीय वर्ष

व्यावहारिक

(Practical)

डी.एल.एड.–द्वितीय वर्ष
कार्य और शिक्षा
Work And Education

(व्यावहारिक–4)

पूर्णांक – 50
बाह्य मूल्यांकन – 25
आंतरिक मूल्यांकन – 25

1. औचित्य एवं उद्देश्य
(Rationale and Aim) :–

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षण की प्रक्रियाओं में छात्राध्यापकों एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। इस हेतु सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों को स्थान देना महत्वपूर्ण लक्ष्य है। छात्राध्यापक शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सकते हैं। अतः शिक्षण के क्षेत्र में कार्य और शिक्षा के अंतर्गत व्यावहारिक कार्यों की भूमिका महत्वपूर्ण है। वर्तमान में कौशल विकास पर जोर दिया जा रहा है जो बच्चों के व्यावसायिक दक्षता को कार्य कौशल के माध्यम से शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास की प्राप्ति सहज संभव है। कार्य विकास के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले होते हैं। कार्य करते हुए जो ज्ञानार्जन होता है, वह न केवल स्थाई होता है बल्कि उसका प्रभाव जीवन पर्यंत रहता है। इससे मनुष्य की क्षमता और मूल्यों का विकास भी होता है। कार्य से जुड़ा शैक्षिक अनुभव बच्चों के विकास में ज्यादा प्रभावशाली होता है।

कार्य और शिक्षा की अवधारणा है कि रचनात्मक/उत्पादक कार्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में मस्तिष्क का विशेष रूप से प्रयोग होता है। इसमें बच्चे, जिन वस्तुओं या कामों की रचना करते हैं, वे उसके विषय में जानते हैं, सोचते हैं। उसके संबंध में भांति–भांति की कल्पनाएँ करते हैं। बनाई जाने वाली वस्तुओं या कार्यों में हाथों के समावेश के भाव से उनमें सौंदर्य बोध का विकास होता है। रचना–कर्म करते समय वे अपने हाथों का प्रयोग करते हैं। हाथ के प्रयोग में अनुभव के और कुशलता की आवश्यकता होती है। शरीर, बुद्धि एवं हृदय तीनों के समुचित विकास से बच्चे में श्रम के प्रति सम्मान की भावना, आत्म निर्भरता, उत्तरदायित्व और सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता मिलती है। बच्चे उत्पादकता को समझते हुये बाजार में उसके प्रयोजन, बाजारी भाव, व्यवस्थापन में नियोजन कर सकते हैं।

2. विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

कार्य और शिक्षा के तहत ऐसे मूलभूत क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जो शिक्षा एवं शिक्षण के क्षेत्र में प्रभावशाली उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

- शैक्षिक के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों के विकास की समझ विकसित करना।
- प्रारंभिक शिक्षा के साथ प्रकृति, पेड़–पौधो, बागवानी, पर्यावरण की समझ प्रायोगिक एवं व्यावहारिक रूप से प्रदान करना।
- हस्तकौशलों के विकास संबंधी कौशलों से परिचित कराना।
- रोजगारमूलक एवं उद्यमिता से संबंधित विभिन्न कौशलो का विकास करना।
- परिवेश व समूह में कार्य करने की आदतों का विकास करना।
- निरीक्षण क्षमता का विकास करना।
- कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करना।

3. विषय का महत्व (Importance of Subject) :–

'कार्य और शिक्षा' प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। 'कार्य और शिक्षा' उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक, बौद्धिक एवं हाथो से किया जाने वाला काम है। यह सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है। इससे उत्पादक वस्तुएँ या सेवाएँ प्राप्त होती है। इसके तहत की जाने वाली गतिविधियाँ सीखने वाले की रुचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं पर आधारित हो सकती हैं। इसारो शिक्षा के स्तर के साथ साथ कुशलताओं और ज्ञान के स्तर में वृद्धि होती जाएगी। इसके द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव आगे चलकर रोजगार पाने में तथा अपने पर्यावरण को समझने में स्थाई रूप में आर्थिक स्तर पर समग्र कालिक प्रयास हो सकता है।

सामान्य तौर पर 'कार्य और शिक्षा' को दो भागों में विभाजित किया गया है:–

1. अनिवार्य क्रियाएँ
2. वैकल्पिक क्रियाएँ

उपरोक्त दोनो क्रियाओं को निम्नानुसार सारिणीबद्ध किया गया है। प्रत्येक संस्था अपने यहाँ उपलब्ध साधन–संसाधनों तथा अपनी सुविधानुसार छात्राध्यापकों से 'कार्य और शिक्षा' से संबंधित अनिवार्य वैकल्पिक क्रियाएँ कराएंगी।

➢ अनिवार्य क्रियाओं की सूची–

- बागवानी
- चित्रकला
- जैम, जैली, अचार, मुरब्बा बनाना

4. इकाईवार अंकों का विभाजन (Unit-wise Division of Marks)

क्र.	इकाई	विषय	अंक
1.	1	अनिवार्य क्रियाएँ • बागवानी • चित्रकला	 8 7
2.	2	वैकल्पिक क्रियाएँ	10
3.	3	बाह्य मूल्यांकन	25
		कुल	50

5. अनिवार्य क्रियाएँ

इकाई 1. बागवानी

- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ–सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना।
- पौधों एवं बीजों का रोपण।
- खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग।
- वृक्षारोपण की योजना बनाना।
- कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना।
- पौधो की सुरक्षा।
- पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि।
- किचन गार्डन।
- संस्थान में गार्डन की तैयारी निर्माण

गतिविधियाँ–

सामान्य तौर पर बागवानी हेतु निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत गतिविधियाँ संचालित की जाना चाहिए। छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त क्रमानुसार गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करें।

- समतलीकरण, कंकड़–पत्थर बीनना, क्यारी का निर्माण एवं गढ्ढों को तैयार करना, गमले तैयार करना, उन्हें भरना। (क्यारियों का निर्माण फूलों, सब्जियों के आधार पर किया जा सकता है)
- बीजों की पहचान करना, बीजों के नमूने एकत्र करना एवं उपलब्ध क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक बीज की मात्रा का निर्धारण करना।
- पौधे तैयार करना– नर्सरी लगाकर, कटिंग, दाब, कलम एवं गूटी द्वारा।

- बीजों एवं पौधों का रोपण करना (विशेषकर कतार से कतार की दूरी एवं पौधों से पौधों की दूरी एवं सुन्दरता के आधार पर)
- उर्वरकों, खादों एवं जैविक खादों की जानकारी प्राप्त करना, पहचान करना एवं नमूने एकत्र करना।
- कम्पोस्ट खाद या हरी पत्ती की खाद तैयार करने हेतु गड्ढे तैयार करना एवं खाद का निर्माण करना।
- प्रति हैक्टर क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक खाद एवं उर्वरकों की मात्रा की गणना करना।
- उर्वरकों को देने के तरीकों के साथ उपकरणों एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करना।
- आसपास के वातावरण एवं प्रचलित कीटों तथा रोगों के आधार पर कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की जानकारी तैयार करना।
- कीटनाशकों एवं रोगनाशकों के छिड़काव की विधियों एवं यंत्रों की जानकारी प्राप्त करना।
- बगीचे के पौधों एवं वृक्षों की कटाई, छँटाई, सहारा देना, सिंचाई हेतु थाला या लाइन बनाना।
- शाला के अनुपयोगी जल का प्रयोग बागवानी हेतु करना।

अंतरण की विधियां

- छात्राध्यापकों से निम्नानुसार नमूना फाइल बनवाई जाए–
  - अ. विभिन्न प्रकार के बीजों की (फूलों की, सब्जियों की)
  - ब. उर्वरकों एवं खादों की (उपलब्ध पोषक तत्वों के अनुसार)
  - स. बागवानी या कृषि कार्यों में उपयोग लाये जाने वाले यंत्रों के चित्रों की, उपयोगिता के आधार पर।
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं।
- औषधीय उद्यान की तैयारी
- भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)– अपने क्षेत्र में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र, शासकीय नर्सरी अथवा प्रसिद्ध राष्ट्रीय या राज्यस्तरीय गार्डन का भ्रमण कराया जा सकता है तथा इस भ्रमण कार्य से क्या सीखा–समझा संबंधी रिपोर्ट भी तैयार की जानी चाहिए, जिसे सभी से साझा किया जा सकता है।
- प्रोजेक्ट– इसके तहत छात्राध्यापकों को एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी है, इसके लिए निम्नांकित सूची से प्रोजेक्ट कार्यों को चुना जा सकता है।
  - अ. अपने प्रशिक्षण संस्थान की स्थिति अनुसार एक वार्षिक पौधा रोपण योजना तैयार करना ताकि प्रांगण की सुन्दरता दिखाई दे सके।
  - ब. अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित पौधों, वृक्षों, पक्षियों आदि की जानकारी एकत्र करना।
  - स. अपने प्रशिक्षण संस्थान में वर्षभर के लिये माहवार बागवानी क्रियाओं का केलैण्डर तैयार करना।

द. जिले/विकासखंड/संकुल स्तर पर अपने वाले प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बागवानी संबंधी कार्यों की एक सामान्य सूची तैयार करना।

इकाई 2 चित्रकला

सामान्य उद्देश्य – छात्राध्यापक सीख सकेंगे।

1. अवलोकन क्षमता का विकास करना।
2. अपने आस पास के वातावरण से संबधित सामग्री का पता लगाना।
3. चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के कौशल का विकास करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1. विभिन्न आकृतियों का अवलोकन करना और वातावरण से रंगों के उपयोग को समझना।
2. चित्रकला की वस्तुओं को पहचानना एवं संग्रहित करना।
3. विभिन्न तरह की सतहों को चित्रकला के संदर्भ में पहचान करना।
4. सरल आकृतियों को बनाना।

कुछ निर्देश शिक्षक प्रशिक्षको द्वारा दिये जायेंगे तथा कुछ अधिगमकर्ता के द्वारा ढूँढ सकेंगे।

विधि

1. सीधे दृश्य सामग्री के अवलोकन द्वारा
2. स्वतंत्र अभिव्यक्ति के द्वारा
3. खोज के द्वारा
4. मॉडलिंग के द्वारा
5. समूह कार्य के द्वारा
6. प्रदर्शनी के द्वारा

6. वैकल्पिक क्रियाएं (प्रथमिक स्तर से 2 तथा उच्च प्राथमिक स्तर से 2 चयन करेंगे)

इकाई–3

भूमिका–

कार्य और शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य कौशल विकास है। जिस वातावरण में बच्चा रहता है उसको समझते हुए स्वयं का विकास कर सके। साथ ही साथ राष्ट्रीय विकास में सहयोग कर सके। इस हेतु शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में कौशल विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। वर्तमान की आवश्यकता अनुरूप स्व विकास के लिये कौशलों की सूची दी जा रही है। इससे छात्रों में विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक कौशलों का विकास होगा। छात्र स्वयं का रोजगार कर सके, उसकी शुरुआत कर सके, अपने को आर्थिक दिशा में समर्थ बना सके।

सामान्य उद्देश्य – इसके पश्चात अधिगमकर्ता सक्षम हो सकेंगे–

- प्रायोगिक उत्पादन कौशल विकसित हो सकेगा जो व्यक्तिगत के साथ–साथ समुदाय का सामाजिक आर्थिक विकास कर सकेगा।
- स्वयं के व्यवसाय के लिये सकारात्मक अभिवृति, रुचि और ईमानदारी सीख सकेंगे।
- ऐसा वातावरण विकसित होगा जिसमे अधिकमकर्ता सीखने के लिये प्रेरित हो सकेगा।
- बच्चों में समुदाय में उच्च उत्पादकता लाने की भावना का विकास करना।

प्राथमिक स्तर के लिये (कक्षा 1 से 5)

उद्देश्य

- तकनीकी कौशल में रुचि विकसित करना
- उत्पादकता के लिये कौशलों और उपकरणों का सुरक्षित ढंग से उपयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के तकनीक प्रविधि का उपयोग करना, अपने विचार को संप्रेषित करना।
- अपने कौशलों का पर्यावरण में सही उपयोग करना।

उच्च प्राथमिक स्तर के लिये (कक्षा 6 से 8)

उद्देश्य

- तकनीकी समस्याओं का समाधान करना
- व्यवसाय शुरु करने के लिये कौशल विकसित करना।
- समूह कार्य को प्रोत्साहित करना। इसके लिये प्रायोजन कार्य में 50 प्रतिशत अधिगमकर्ता की सहभागिता है।
- अधिगमकर्ता अपनी आय/आवक (Income) को पैदा कर सके उसकी योजना बना सके ऐसे कौशलों का विकास करना।
- अपनी आय और व्यय के अभिलेख का रखरखाव कर सके ऐसे अभ्यास कौशलों का विकास करना।
- अपने व्यवसाय में होने वाले लाभ हानि का मूल्यांकन करना।
- व्यवसाय में समय का मूल्य और कठिन श्रम से सफलता के महत्व को जोड़ पाना।
- अधिगमकर्ता में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये कौशल विकसित करना।

विषय प्राथमिक स्तर के लिये कार्यों की सूची– (किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. कागज कला
2. खिलौना निर्माण
3. कक्ष सज्जा

4. दुकान व्यवस्थापन
5. बाजार प्रक्रिया
6. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ
7. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं।
8. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी
9. ललित कला और व्यवसाय
10. खेती एवं व्यवसाय
11. रोजगार
12 बुक बाइंडिग
13. आभूषण तैयार करना
14. ग्रामीण क्षेत्रों के व्यवसाय
15. कपड़े सिलना
16. घर में बचत एवं खर्च

उच्च प्राथमिक के लिये सूची(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

1. कागज कला

- कागज के प्रकारों को नाम सहित जानना।
- कागज के प्रकार अनुसार उससे कलात्मक कलाकृतियां बनाना।
- रद्दी कागज का उपयोग।
- कागज कला कृतियों के बाजार में महत्व को समझना।
- तैयार सामग्री के आय व्यय का ब्यौरा तेयार करना।
- खिलौना/मूर्ति निर्माण।
- काष्ठ/मिट्टी या अन्य प्रकार के खिलौना बनाने की तकनीक समझना।
- तैयार किये जा रहे खिलौने का बाजार मूल्य और उपयोगिता को समझना।
- खिलौने निर्माण में सावधानी और रखरखाव को समझना।

- खिलौने के शैक्षिक मूल्य को समझना (यह कौशल-खिलौना बाजार के साथ-साथ, खिलौने की आवश्यकता अनुरूप शोध को प्रवृत्त करेगा, किस आयु वर्ग के लिये किस तरह की खिलौने की आवश्यकता होगी)।

2. मिट्टी या लकड़ी या फर के खिलौने बनाना

- खिलौने बनाने के साधनों की जानकारी।
- खिलौनों की उपयोगिता व महत्व।
- खिलौनों का रख-रखाव।
- खिलौने आकर्षक बनाना।
- खिलौने बनाने वाली सामग्री की जानकारी।

3. कक्ष सज्जा–

- कक्ष सज्जावट के उद्देश्य को समझना
- कक्ष के प्रकार (शालेय कक्ष, घर का ड्राइंग रूम, आफिस के अधिकारी कक्ष) के अनुरूप कक्ष सज्जावट की योजना बनाना।
- कक्ष सज्जावट के लिये उपयोगी सामग्री की सूची तैयार करना एवं संग्रह करना।
- कम से कम लागत में कक्ष सज्जा की योजना बनाना।

  (यह कौशल इंटीरियर डेकोरेशन की नींव तैयार करने में मददगार हो सकता है)

4. दुकान व्यवस्थापन

- दुकान के आशय को समझना
- दुकान के प्रकार को समझना
- दुकान में सामग्री को व्यवस्थित रखना
- बिक्री के दौरान सामान को यथोस्थान रखने को जानना
- प्रतिदिन आय व्यय का ब्यौरा तैयार करते हुये लाभ हानि को पहचानना।
- अपने आर्थिक लाभ को बढ़ाने हेतु योजना बनाना।

  (प्रारंभिक स्तर पर अपने व्यवसाय को स्थापित करने का कौशल विकसित करने में मदद करेगा)

5. बाजार प्रक्रिया (साप्ताहिक, मेला, सब्जी, कपड़ा)

- बाजार के महत्व को जानना।
- लेन देन की प्रक्रिया को समझना
- मोल भाव की प्रक्रिया को समझना
- सामग्री की गुणवत्ता को परखना
- सेल्समेन के व्यवहार को परखना

- व्यवसायी के व्यवहार और व्यवसाय में आपसी संबंध को समझना

6. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ

- घरेलू व्यवसाय के रूप में हो रही गतिविधियों की सूची बनाना
- घरेलू स्तर पर किसी व्यवसाय को कैसे चलाया जा रहा है, जानकारी प्राप्त करना।
- घरेलू स्तर के व्यवसाय के प्रचार–प्रसार के तरीके समझना।
- घरेलू स्तर पर किये जा रहे व्यवसाय का आय व्यय का दैनिक/साप्ताहिक, मासिक/वार्षिक व्यय विवरण को समझना।
- घरेलू स्तर के व्यवसाय को बड़े पैमाने पर ले जाने की योजना बनाना
- घरेलू व्यवसाय के काम लाभ/महत्व समझना

(घरेलू व्यवसाय के प्रकार समझ सकेंगे, लाभ समझ सकेंगे, महत्व समझ सकेंगे)

7. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं –

- प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता (दैनिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक) की सूची तैयार करेगा।
- प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति कैसे और किसके द्वारा की जा रही है तैयार करेगा।
- ऐसी आवश्यकताओं की सूची बनाएगा जिसे उसे स्वयं पूरा करना है और उसकी पूर्ति की योजना बनाएगा।
- आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किये गये संघर्ष/मेहनत/कठिन कार्य का ब्यौरा तैयार करेगा।

(अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने का कौशल विकसित होगा)

8. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी–

- ईमानदारी के आशय को समझना
- व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी के महत्व को समझना।
- व्यावसायिक गतिविधियों में विज्ञापन की विश्वसनीयता को समझना।
- विज्ञापन और व्यवसाय का महत्व

(वर्तमान में विज्ञापन से चलता बाजार और ईमानदारी के महत्व को समझ सकेगा तथा ईमानदारी से दूरगामी परिणामों को जानना)

9. ललित कला और व्यवसाय

- ललित कला को समझना
- ललित कला पर आधारित व्यवसाय।
- ललित कला पर आधारित सामग्री की बाजार तक पहुँच।

10. खेती एक व्यवसाय

- खेती को लाभ का धंधा बनाने के प्रयास
- खेती की मौसम पर निर्भरता, समस्याओं को समझना।
- कृषि यांत्रिक का महत्व

11. रोजगार

- रोजगार का महत्व
- रोजगार के अवसर
- विभिन्न रोजगार हेतु योग्यता, रोजगार प्राप्ति हेतु तैयारी प्रयास
- भविष्य में किस तरह के रोजगार बढ़ने की सभावना

12. बुक बाइंडिंग

- कैसे होती है
- महत्व

13. आभूषण तैयार करना

- प्रचलित आभूषण एवं परंपरागत आभूषणों की जानकारी।
- कम लागत में आभूषण निर्माण करना।
- आभूषण का बाजार मूल्य जानना।
- बाजार में जगह बनाने हेतु प्रयास करना।

14. ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय

- घरेलू एवं कुटीर उद्योगों की जानकारी
- विभिन्न घरेलू व्यवसाय में लगने वाला कच्चे माल की जानकारी (कोई एक)
- घरेलू स्तर पर लगाये जाने वाले व्यवसाय की योजना बनाना।
- किये जाने वाले व्यवसाय के बाजार मूल्य का पता लगाना।

15. कपड़े सिलना–

- एक व्यवसाय के रूप में देखना।
- व्यवसाय के रूप में स्थापित करने की योजना बनाना।
- प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रयास करना।

16. घर में बचत एवं खर्च

- बचत से आशय
- घर में किस तरह बचत हो सकती है।

- घर के प्रमुख और गौण खर्चे क्या हैं।
- माह में खर्चे का हिसाब रखना।
- आगामी माह हेतु बचत योजना बनाना।

17. व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब–किताब एवं बजट बनाना–

- व्यक्तिगत तथा घरेलू बजट बनाने की उपयोगिता।
- उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची तैयार करना।
- प्रत्येक सामग्री के मूल्य की जानकारी प्राप्त करना।
- आय व आवश्यकता के अनुसार परिवार का बजट बनाना।
- आय–व्यय का लेखा–जोखा रखना व महत्व समझना।
- वर्तमान आय–व्यय के लेखों की पिछले से तुलना करना।

18. काष्ठ का कार्य :–

- लकड़ी की किस्म एवं उसकी उपयोगिता जानना।
- लकड़ी को सुरक्षित रखने की विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की लकड़ी के गुण जानना।
- कार्य करते समय सावधानियाँ एवं उपचार।
- औजारों का वर्गीकरण करना।
- औजारों का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना।
- वार्निश बनाने की विधि तथा पॉलिश करना, स्प्रे पॉलिश बनाना तथा वार्निश पॉलिश व स्प्रे पॉलिश के गुण, अवगुण एवं अंतरों को समझना।
- काष्ठ के उपयोग को समझना
- खिलौने में उपयोग के लिये साधनों की जानकारी
- खिलौनों का रख–रखाव
- खिलौनों को आकर्षक बनाने हेतु प्रयास
- फर्नीचर का रख रखाव तथा सही ढंग से उपयोग
- फर्नीचर को पालिश करना
- फर्नीचर को दीमक–सीलन से बचाना

19. उद्योग में शुरुआत (उद्यमी)

- समाज में अपना उद्योग प्रारंभ करना।
- समाज में अपने उद्योग को हमें लेना उद्यमी के रूप में स्थापित होने की प्रक्रिया।
- उद्योग प्रारंभ करने में आने वाली कठिनाइयाँ

- उद्योग को प्रचार प्रसार हेतु प्रयास
- उद्योग का वाजारीकरण

20. उद्यमी एवं राष्ट्रीय विकास

- प्रोजेक्ट कार्य के रूप में लेना
- कैसे उद्योग राष्ट्रीय विकास में सहायक हैं।

21. आर्थिक विकास में भूमिका– आर्थिक विकास से आशय

- कार्य करते हुये आर्थिक स्थिति को मजबूत करना।
- आर्थिक विकास में स्वयं की भूमिका

22. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि–

- किसी भी कार्य में उत्कृष्टता लाने से आशय समझना
- कार्य की गुणवत्ता को और अधिक श्रेष्ठ बनाना।
- किये कार्यों में उपलब्धि शामिल करना।

25. प्रदर्शनी और प्रदर्शन

- प्रदर्शनी और प्रदर्शन से आशय
- प्रदर्शनी का महत्व
- प्रदर्शित में प्रदर्शन प्रक्रिया का महत्व
- प्रदर्शिनी के लाभ

26. अभिलेखों का रख रखाव–

- अभिलेख से आशय
- अभिलेख के प्रकार
- अभिलेखों का महत्व
- किसी 2 प्रकार की अभिलेखों का साधारण

27. बैंकिग सम्बधित जानकारी

- बैंक जमा वचत, लेन देन पर्ची की जानकारी
- बाजारों में वस्तुओं पर मिलने वाली छूट (प्रतिशत में) की समझ, बिल बनाना
- जमा, निकासी पर्ची की समझ
- बैंक की योजनाएँ
- योजना से मिलने वाले लाभ– हानि की समझ
- अखबारों में छपने वाले विज्ञापन की कटिंग से बाजार के सामानों पर मिलने वाली छूट की स्क्रैप बुक बनवाना

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ वेजीटेबल क्राप्स – डॉ. एस.पी. सिंह
2. वेजीटेबल प्रोडक्शन – डॉ. डी.व्ही.एस. चौहान
3. फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन – टी.के. बोस
4. हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर – डॉ. के.एन. चड्ढा
5. (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एल द्वितीय वर्ष

रचनात्मक नाटक,ललित कला और शिक्षा

Creative Drama,Fine Art and Educaion

(व्यावहारिक–5)

पूर्णांक – 50
बाह्य मूल्यांकन – 25
आंतरिक मूल्यांकन – 25

औचित्य एवं उद्देश्य – (Rationale And Aim)

दृश्य श्रव्य कला (लोकसंगीत, सुगम संगीत लोकनाटक, लोकनृत्य आदि)

गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं के मेल को संगीत कहते हैं। लोक संगीत या लोकगीत अत्यत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उदगार है, ये लेखनी द्वारा नहीं बल्कि लोक जिव्हा का सहारा लेकर जनमानस से नि:सृत होकर आज तक जीवित हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते है, नदियाँ गाती है, फसले गाती है, उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कठों से लोग समूह में लोकगीत गाते हैं।

सुगम संगीत भारतीय संगीत विद्या का एक अंग है वह संगीत जिसे सहजता से सीखा, गाया और बजाया जा सके, जिसे निश्चित नियमों में बाँधा नहीं गया है, जो लोगो में प्रिय है, सुगम सगीत कहलाता है।

गीत, कहानी और बाल आधारित गतिविधियों को सीखने में गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी गीत में पिरोये वर्णों और शब्दों से बच्चे खेलते है जीते है और उनसे अपनेपन का रिश्ता जोड़ लेते है। भाषायी कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के विकास में गीत सहायक सिद्ध होते है, बल्कि यह कहें कि सीखने की पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए नीरस थकाऊ और कष्टदायी न होकर रोचक, सरस और आनंददायी हो जाती है।

लोक नृत्य आनंद का प्रतीक है जो जीवन को आनंद से आल्हादित कर देती है। हावभाव आदि के साथ जो शारीरिक गति दी जाती है उसे नृत्य कहा जाता है।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- कला माध्यमों के साथ स्वयं कार्य करने के अवसर देना।
- विविध क्षेत्रों के कलाकारों को सुनने/उनके कार्य को देखने और उनसे बातचीत करने के अवसर उपलब्ध कराना।

- अपने क्षेत्र के सांस्कृतिक मेलों एवं प्रदर्शनियों का अवलोकन करना और इस अनुभव पर चर्चा करना। स्थानीय कलाकारों/कामगारों (महिला एवं पुरुष) को आमंत्रित कर उनकी प्रतिभाओं से सीखने के अवसर निर्मित करना। ये स्थानीय कला जैसे मांडना, रंगोली, मेंहदी, मूर्ति बनाना आदि हो सकते हैं।
- संस्थान में हस्तकला, चित्रकला, मूर्तिकला, कठपुतली, मुखौटे तथा शिक्षण सामग्री के प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उसमें सहभागिता करना।
- विभिन्न कलात्मक और सामाजिक सरोकारों से सम्बंधित फ़िल्में दिखाकर उन पर चर्चा करना।
- लोकसंगीत एवं सुगम संगीत के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- एकल व सामूहिक लोक नृत्यों के अभ्यास एवं प्रदर्शन के अवसर देना।
- संगीत के विभिन्न रूपों को समझते हुए मानवीय संस्कृति में संगीत की भूमिका को आगे ले जाना।
- संगीत का प्रयोग करते हुए प्रस्तुतियाँ देना।
- लोक संगीत के कलाकारों और सुगम संगीत के कलाकारों की प्रस्तुतियां करवाना एवं इस अनुभव पर चर्चा करना।
- आवाज़ खोलने का प्रशिक्षण देना, स्वर लय व ताल का अभ्यास करवाना।
- क्षेत्र विशेष के पारंपरिक लोक संगीत जैसे– लोरियां, फसल के गीत, त्योहारों के गीत, विवाह के गीत आदि को एकत्रित करना व उनका आनंद लेना।
- बच्चों के साथ मिलकर सांगीतिक टुकड़ों की रचना करना और संगीत के सत्र का संचालन करना।
- मध्यप्रदेश के प्रमुख लोक नृत्य के बारे में बताना।
- सहजता से उपलब्ध विभिन्न वाद्य यंत्रों से परिचय कराना।

स. क्र.	इकाई	विषय	बाह्य मूल्यांकन अंक	आंतरिक मूल्यांकन अंक	कुल अंक
1.	1.	दृश्य श्रव्यकला (लोकसंगीत, सुगम संगीत आदि)	12	12	24
2.	2.	लोकनाटक, लोकनृत्य	13	13	26
		कुल अंकों का योग	25	25	50

सत्रगत कार्य (Assignment)

- अपने क्षेत्र में प्रचलित लोकनृत्य और लोकगीतों की जानकारी एकत्र करना।

- अपने क्षेत्र के कुछ लोकगीतो का समूह करना।
- समूह मे किसी लोकनृत्य और लोकगीत को गाने का अभ्यास करें व उनकी प्रस्तुति देना।
- अपने अंचल मे प्रचलित किसी लोकनाट्य का अवलोकन करें, उसके बारे मे समूह मे चर्चा करना।
- अपनी कक्षा मे समूह मे किसी लोकनाट्य का मंचन करना।
- एक विज्ञापन तैयार कर प्रस्तुत करना।
- किसी लोक कलाकार से बातचीत करत हुए उनकी कला यात्रा की जानकारी इकट्ठी करना, इस कला की आज की स्थिति और कलाकारों की तकलीफो के बारे मे भी जानकारी एकत्रित करना।
- कागजों / पेपरमेसी / कपड़े आदि के प्रयोग से कठपुतली मुखौटे आदि बनाना।
- कट आउट्स के माध्यम से कहानी का प्रदर्शन करना।
- इंटर्नशिप के दौरान कक्षा शिक्षण के समय कठपुतली का प्रयोग कर कहानी सुनाना।
- इटर्नशिप के दौरान कट आउट्स के माध्यम से शिक्षण करना।

अन्तरण की विधियाँ– (Mode of Transaction)

- बच्चों को कहानी की सीरीज दिखाकर ।
- चित्र (दृश्य) दिखाकर।
- कठपुलती के माध्यम से ।
- प्रचलित गीतो को मोबाइल और स्वयं द्वारा सुनाना

सुझावात्मक संदर्भ सूची–

- एन.सी.एफ. 2000, एन.सी.एफ. 2005, NCERT न्यू दिल्ली
- आधार पत्र– कला शिक्षा
- दिवास्वप्न गिजूभाई बधेका NCERT न्यू दिल्ली
- कला कारीगरी की शिक्षा– गिजू भाई बधेका का भाग– 1,2
- हर दिवस कला दिवस – डॉ. पवन सुधीर वीडियो NCERT
- बेसिक एज्युकेशन – बेनीप्रसाद
- शिक्षा का वाहन कला – देवीप्रसाद
- बच्चों के लिए खेल– क्रियाएँ – मीना स्वामीनाथन
- लोक संस्कृति – वसन्त निरगुणे
- प्रतिमा विज्ञान – डॉ. इन्दुमती मिश्र (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी)
- कला चित्रकला – विनोद भारद्वाज (प्रवीण प्रकाशन)
- कला एवं तकनीक – डॉ. अविनाश व. वर्मा, अमित वर्मा
- हस्तशिल्पों की धरोहर राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
- आधार पत्र 1.7 और 1.8 NCERT

- ललित कला 2009 (राष्ट्रीय मानव संग्रहालय)
- मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति – डॉ.एस.एल. वरे (कैलाश पुस्तक सदन भोपाल)
- भारत की चित्र कला की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
- भारतीय संगीत की कहानी – डॉ. भगवत शरण उपाध्याय (राजपाल एण्ड संस दिल्ली)
- लर्निंग कर्व – कला स्कूल शिक्षा में
- कुछ–कुछ बनाना – एन. सायर वाइजमैन – (एकलव्य प्रकाशन)
- शिक्षण सहायक सामग्री – मेरी ऐन दास गुप्ता (अनुवाद अरविन्द गुप्ता)
- कला शिक्षा शिक्षण – डॉ. प्रभा शर्मा
- चित्रकला के मूलतत्व – राजहंस प्रकाशन
- कला से सीखना – जेन साही एवं रोशन साही (एकलव्य प्रकाशन)
- मध्यप्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन – डॉ. शादाब अहमद सिद्दीकी ।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- ICT दिल्ली के कला शिक्षा के समस्त विडियो जैसे– कहानी एनिमेशन, कठपुतलीकला आदि।
- साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परिचर्चा, ड्रॉइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
- योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

डी.एल.एल द्वितीय वर्ष

बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा

Children's Physical, Emotional Health and Health Education

व्यावहारिक–6

पूर्णांक अंक –50

बाह्य अंक – 25

आन्तरिक अंक – 25

औचित्य एवं उद्देश्य (Rationale & Aim)

इस एक वर्षीय व्यवहारिक पाठ्यक्रम की सरचना प्रारम्भिक विद्यालयों के बच्चों के शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य के विकास हेतु किया गया है। पाठ्यक्रम मे शिक्षा, संवेग और स्वास्थ्य के मूल अन्तर्सम्बन्धों को जोडकर बताया गया है। बच्चों को ध्यान में रखकर छात्राध्यापक मे संवेग और स्वास्थ्य विकास हेतु शिक्षा के योगदान को पूर्णतः मान्यता दी गई है। पाठ्यक्रम मे शिक्षा और स्वास्थ्य के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को प्रदर्शित किया गया है। अच्छा स्वास्थ्य अधिगम हेतु आवश्यक शर्त होने के साथ ही प्रत्येक बच्चे का मूल अधिकार भी हैं। कक्षाओं मे नामाकन, ठहराव, ध्यानकेन्द्रण और अधिगम परिणाम बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक विकास होने के साथ मजबूत सम्बन्ध रखता है।

स्वास्थ्य में केवल रोगाणुओं और व्याधियो से मुक्ति ही नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य के सामाजिक, आर्थिक, संवेगात्मक और शारीरिक पक्षों की समझ से परिपूर्ण है। शिक्षक को बच्चों के स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों को खोजकर स्वास्थ्य शिक्षा की जड़े बच्चों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में जमानी होगी। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य शिक्षक को स्वयं और बच्चों दोनों के स्वास्थ्य मुद्दों की आर्थिक और सामाजिक परिपेक्ष्य में निर्धारित समझ से लैस करना है। केवल शिक्षक की अभिवृत्ति के बारे में कहने के बजाय यह पाठ्यक्रम छात्राध्यापक को असमान और विविध प्रकार के बचपन और बाल–अनुभवों को समझने के अवसर देता है।

विशिष्ट उद्देश्य : (Specific Objectives)

- स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणाओं की सम्पूर्ण समझ बनाना तथा सामाजिकता निर्धारण फ्रेमवर्क का उपयोग करते हुए बच्चों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को समझना।
- स्वास्थ्य और शिक्षा के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों को समझना तथा स्वास्थ्य मामलों में शिक्षकों के योगदान को समझना।
- प्रारंभिक शालाओं में संचालित विशिष्ट बाल–स्वास्थ्य कार्यक्रमों का परीक्षण करना।
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा में शिक्षण के ज्ञान और कौशल का विनिर्माण करना तथा अध्यापक शिक्षा के अन्य पाठ्यक्रमों और स्कूल विषयों के प्रसगों से एकीकृत करना।

- प्रायोगिक कार्यों के माध्यम से स्कूल/कक्षा की वास्तविक यथार्थताओं से सैद्धान्तिक और अवधारणात्मक अधिगम को जोड़ना।

पाठ्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षा और स्वास्थ्य के अर्न्तसम्बन्धों की समझ स्थापित करना और वे किस प्रकार बच्चें की स्वास्थ्य आवश्यकताओं के साथ जुड़ती हैं, बताना है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु शारीरिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य शिक्षा और कल्याण को प्रत्येक बच्चे के मूल अधिकार के रूप में जोड़ती है।

इकाईवार अंक विभाजन

सं क्र.	इकाई	विषय	अंक
1	1	बच्चों का शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा	7
2	2	स्वास्थ्य शिक्षा हेतु ज्ञान एवं कौशल विकास–	6
3	3	भावनात्मक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकता, विभिन्नताएँ एवं समायोजन	6
4	4	शारीरिक शिक्षा– स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अभिन्न अंग	6
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई 1. बच्चों का शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा

- स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा, व्यवहार परिवर्तन प्रादर्श बनाम स्वास्थ्य प्रसार उपागम का तार्किक अध्ययन।
- स्वास्थ्य शिक्षा उपागम की केस स्टडी– उदा.– एकलव्य, म.प्र. एफ.आर.सी.एच. महाराष्ट्र, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा का कार्यक्रम, स्वामी विवेकानंद युवा आंदोलन, कर्नाटक आदि।
- शालेय स्वास्थ्य पाठ्यक्रय का क्षेत्र – सी.बी.एस.ई., अन्य विषय संबंधी
  रूपरेखा – (उदा. एकलव्य, एस.एच.ई.पी., एफ.आर.पी.एच, यूनीसेफ, नाली–काली रणनीति, शालेय स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा)

इकाई 2. स्वास्थ्य शिक्षा हेतु ज्ञान एवं कौशल विकास–

- भोजन एवं पोषण
- संक्रामक रोग
- स्वयं के शरीर का ज्ञान– स्वास्थ्य एवं उपचार संबंधी वैकल्पिक तंत्र
- प्राथमिक उपचार (कार्यशाला पद्धति)
- बाल शोषण :– (इस संदर्भ में शोषण के संदर्भित अर्थ, विभिन्न प्रकार एवं प्रभाव, कानूनी प्रावधान की जानकारी । इस बिन्दु के अंतर्गत शारीरिक दण्ड एवं बाल यौन उत्पीड़न की जानकारी भी है। इसका उद्देश्य एक शिक्षक के तौर पर इस क्षेत्र विशेष में जागरूकता, चिंतन, जानकारी एवं मूलभूत कौशल का विकास करना है।

इकाई 3 – भावनात्मक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएँ, विभिन्नताएँ एवं समायोजन

- भावनात्मक स्वास्थ्य की समझः आत्मावलोकन
- भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य का ज्ञानात्मक संबंध
- शालेय कार्यप्रणाली एवं इसका बाल भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव।
- कक्षा में विभिन्नता– भिन्न–भिन्न अधिगमकर्ता, भिन्न–भिन्न आवश्यकताएँ एवं समावेशन का सिद्धान्त ।
- अधिगम अशक्तता एवं कक्षा में सहभागिता।

इकाई 4– शारीरिक शिक्षा– स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अभिन्न अंग।

- शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता – स्वास्थ्य एवं शिक्षा से संबंध ।
- शारीरिक शिक्षा एव खेलकूद
- पर्यवेक्षण एव मार्गदर्शन
- खेल भावना, सहयोग एवं सामंजस्य क्षमता का विकास।
- अभिरूचि एवं योग्यताओं में विभिन्नता।

इकाई 4 पर आधारित प्रायोगिक कार्य– संस्थान में मूलभूत व्यायाम, पी.टी. एवं समूह खेल (जैसे– खोखो, कबड्डी, फुटबॉल) का आयोजन एवं सहभागिता।

इंटर्नशिप के दौरान संस्था में उपलब्ध शारीरिक शिक्षा संबंधी गतिविधि, संसाधन, स्थान एव किस गतिविधि को को बालक/बालिका द्वारा खेला जा रहा है, का निरीक्षण कर रिकार्ड रखें।

प्रागंण की संरचना, खेलों के प्रकार, विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की पहचान और छूटे हुए छात्रों की रिपोर्ट को निम्न बिन्दुओं मे समाहित करें।

– शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति।

– खेल के स्थान एवं संसाधनों की सीमितता की जानकारी।

– खेलों में नवाचार

– क्षेत्रीय खेलों (ग्रामीण खेलों) का चिन्हांकन एवं जानकारी का संधारण।

सत्रगत कार्य (Assignment)–

शाला इंटर्नशिप के लिये जाने से पहले प्रशिक्षु (इंटर्न) को स्वास्थ्य संबंधी विषयवस्तु को अन्य विषयों के साथ समायोजित करते हुए गतिविधियों, कार्य योजना एवं सामग्री का निर्माण करना अनिवार्य हैं

छात्र प्रशिक्षु को एक चयनित स्वास्थ्य शिक्षा विषयवस्तु पर बनाई गई पाठ्य योजना को एस.डी.पी. (SDP) के दौरान प्रस्तुत करना होगा।

स्वास्थ्य योजना संबंधी विचार एवं निर्मित सामग्री और किये गये शोध कार्य में दी गई जानकारी सही हो एवं आतंरिक मूल्यांकन हेतु रिफ्लेक्टिव रिर्पोट प्रस्तुत की जाए।

- योग : मूलभूत सिद्धान्तों एवं आसनों का अधिगम
- एथलेटिक्स (व्यायाम)
- खेलकूद का आयोजन एवं खेल के मैदानों का चिह्नांकन आदि।

अंतरण की विधियां (Mode of Transaction)

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग, पीटी, जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।

- चार्ट कैलेण्डर, मॉडल, आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा।
- हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा।
- प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है।
- स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्राम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा प्रयत्नशील बनाने का प्रयास करना।
- पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद–विवाद, परियर्चा, ड्रॉइंग, पेटिगं, फिल्म, डाक्यूमेन्ट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना।
- योग, खेल, पी.टी. (व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिसका छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

सुझावात्मक संदर्भ ग्रंथ सूची

- आओ कदम उठाएं : एक सहायक पुस्तिका, USRN-JNU, New Delhi. (A resource tool book for schools to address issues of health infrastructure and programme)
- Deshpande, M. Et al. (2008). The Case for Cooked Meals: Concerned Regarding Proposed Policy Shifts in the Mid-day Meal and ICDS Programs in *Indian Pediatrics*. pp 445-449.
- Dasgupta, R., et.al. (2009). Location and Deprivation: Towards an Understanding of the
- Agarwal, P. (2009). Creating high level of learning for all students together. *Children First*. New Delhi. (Hindi and English).
- Ashtekar, S. (2001). *Health and Healing: A Manual of Primary Health Care*. Chapters 1, 3, 7
- Iyer, Kirti (2008). *A look at Inclusive Practices in Schools*. Source RRCEE. Delhi University.
- Sen, S. (2009). *One size does not fit all children*. Children First, NewDelhi. (Hindi and English)
- Shukla, A. And Phadke, A. (2000). Chapter 2, 3, 4, 6 and S.6 TR-6RTTafr: •6FT 1 Pune: Cehat
- (http: www.tess-india.edu.in = OER एवं वीडियो)

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

शिक्षण अभ्यास एवं शाला इंटर्नशिप

(Teaching Practice and School Internship)

व्यावहारिक

पूर्णांक — 400
बाह्य अंक — 200
आंतरिक अंक — 200

समय अवधि — 16 सप्ताह
दिवस — 96

औचित्य एवं उद्देश्य– (Rationale and Aim)

शिक्षण अभ्यास के अंतर्गत शाला आधारित गतिविधियों के प्रारूप की रचना की जाती है ताकि छात्राध्यापक **(Student-Teacher)** सैद्धांतिक विषयों से **व्यावहारिक** रूप से जुड़ सके तथा उसे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में मदद मिल सकें और प्राप्त पूर्व ज्ञान और **अभ्यासों की क्रमबद्ध संरचना** उनके शिक्षण को प्रभावशाली रूप से सक्षम बना सकें। शाला इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे अपने **मेंटर्स/सहपाठियों की कक्षा शिक्षण प्रक्रिया** का अवलोकन करे जिससे उनमें **छात्रों के व्यवहार, अनुदेशात्मक अभ्यास, छात्र अधिगम वातावरण** और **कक्षा प्रबंधन** के प्रति अंतःदृष्टि का विकास हो सके। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे अभ्यास के दौरान **समालोचनात्मक चिंतन** एवं विचार विमर्श करे और अपने को शाला के अभिलेखों के रख–रखाव, पाठ योजनाओं के निर्माण, इकाई योजना के निर्माण, **तकनीकी (ICT)** का उपयोग करते हुए **कक्षा प्रबंधन, शाला–समुदाय–पालक** के हस्तक्षेपों से संबंधित गतिविधियों में संलग्न रखकर स्वयं के विकास एवं **शिक्षण अभ्यास के व्यावसायीकरण** पर चिंतन करें।

शाला आधारित गतिविधियों के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किया जाने वाला अन्य प्रमुख कार्य **पाठ योजनाओं** एवं **इकाई योजनाओं** का प्रस्तुतीकरण है जिसके लिए **प्रथम** एवं **द्वितीय वर्ष** में अलग से निर्दिष्ट किया गया है।

इंटर्नशिप अवधि के दौरान की गई समस्त गतिविधियों को **पोर्टफोलियो** एवं **रिफ्लेटिव जर्नल** में प्रस्तुत किया जायेगा। छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इंटर्नशिप के दौरान अपने द्वारा की गई समस्त गतिविधियों के अनुभवों का, अवलोकनों का एवं निष्कर्षों का रिकार्ड संधारित करेगें। **रिफ्लेटिव जर्नल** में की गई प्रविष्ठियाँ **विश्लेषणात्मक** होनी चाहिए जैसे– पूर्व समझ के आधार पर **क्या** नया और भिन्न है, **क्यों** उसके द्वारा निर्देशों के आधार पर किये गये कुछ **अवलोकन, कक्षा प्रबंधन, शिक्षक पालक संघ** से समानता

या भिन्नता रखते है। ये अवलोकन **कैसे** आलोचना पर आधारित होना चाहिए जिससे उसके अभ्यास मे परिवर्तन आ सके। **प्रत्येक छात्राध्यापक (इंटर्न) का आकलन उसके द्वारा बनाये गये पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेटिव जर्नल में की गई प्रविष्ठि के आधार पर किया जायेगा।**

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का **मुख्य उद्देश्य** छात्राध्यापक को यह अवसर उपलब्ध कराना है कि अभ्यासकर्ता के रूप मे उसे **अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव** प्राप्त हो सके। इस धारणा के आधार पर शाला इंटर्नशिप की योजना इस प्रकार बनाई जाए जिसमें **शाला तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के मध्य भागीदारी** (Partnership) हो सके। छात्राध्यापक को शालेय गतिविधि मे एक **नियमित शिक्षक** की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए स्वयं को शाला के सभी कार्यों से जोडना चाहिए परन्तु इसके साथ यह प्रावधान भी होना चाहिए कि एक **अभ्यासकर्ता के रूप में उसकी भूमिका रचनात्मक हो।** इंटर्नशिप शाला के द्वारा उसे आवश्यक भौतिक स्थान के साथ-साथ नवाचार हेतु **शैक्षणिक स्वतंत्रता** भी दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि **प्रस्तावित पार्टनरशिप मॉडल द्वारा इंटर्नशिप शाला को भी प्राप्त होने वाले लाभों पर ध्यान केंद्रित करते हुए** चयनित किया जाए।

यह कार्यक्रम **पूर्णतः क्षेत्र आधारित** है, इसमे छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा। इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्राध्यापकों को एक **चिंतनशील शिक्षक** के रूप में ज्ञान के आधार पर बच्चों से जुडने, बच्चों के प्रति उसकी समझ और कक्षागत प्रक्रिया, सैद्धांतिक शैक्षणिक विचारों, रणनीतियों एवं कौशलों को क्रम से विकसित करने की आवश्यकता होगी तभी **छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक विचारों को शाला में परखने के अवसर मिलेंगे।**

शाला इंटर्नशिप एक **द्विवर्षीय कार्यक्रम** है। प्रत्येक वर्ष में छात्राध्यापकों से **अलग-अलग** अपेक्षाऐं हैं। **प्रथम वर्ष** मे छात्राध्यापक का परिचय शाला से, शाला के वातावरण से, बच्चों को समझने से तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने से होगा। **द्वितीय वर्ष** में छात्राध्यापक एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करेगा। यहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के **अकादमिक सुपरवाइजर** संवाद और चर्चा के आधार पर मार्गदर्शन और **फीडबैक** देकर उसकी सहायता करेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- शाला के अनुभवों को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए **कक्षा शिक्षण** के अतिरिक्त **शालेय गतिविधियों** और **अभिभावकों** के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान करना।
- छात्रों की विविध **आवश्यकताओं** एवं **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया** को प्रभावित करने वाले **विभिन्न संदर्भों** को ध्यान में रखते हुए **उचित योजना** का निर्माण कर एक **नियमित शिक्षक** की भूमिका को आत्मसात (ग्रहण) करना।
- वर्तमान प्रणाली की सीमाओं के अन्दर रहते हुए **नवाचार** करने की क्षमता को विकसित करना।

- कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियों को सिखाने के लिए गतिविधियों का उचित चयन एवं क्रियान्वयन करना।
- अपने विद्यालयीन अनुभवों पर समालोचनात्मक चिंतन करना और इसका रिकार्ड रखना।
- केवल उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय बच्चों के सीखने के विभिन्न पहलुओं का आकलन करना।
- कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के शाला विषयों के शिक्षण में सहभागिता करना।

इन उद्देश्यों के अनुसार कार्यक्रम में निम्नलिखित अधिभार के घटकों की आवश्यकता होती है।

- योजना — 30%
- शिक्षण — 30%
- चिन्तनशील जर्नल एवं रिकार्ड रखरखाव — 40%

शाला इन्टर्नशिप कार्यक्रम में छात्राध्यापक को नवाचारी शिक्षण पद्धति के केन्द्र एवं नवाचारी अधिगम के केन्द्र को समाहित करते हुए भ्रमण करना चाहिये। जहाँ तक संभव हो कक्षा आधारित शोध परियोजनाओं को लेना चाहिये। इंटर्नशिप शालाओं में संसाधनों को विकसित कर संधारित करना चाहिये।

शाला इंटर्नशिप में शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रति विषय 4 इकाई योजना से अधिक शामिल नहीं करें। इकाई की योजना बनाते समय शाला की पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त विविध स्त्रोतों से प्राप्त सामग्री की समालोचनात्मक सांलग्नता को शामिल करते हुए संगठित कर प्रस्तुतिकरण किया जाये। प्रश्नों को विशेष रूप से इस प्रकार तैयार करें कि–

अ) विद्यार्थी के ज्ञान और समझ का आकलन कर सकें।

ब) अर्थपूर्ण कक्षा निर्माण और आगे की ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया कर सकें।

स) छात्र अधिगम का आकलन करते हुए शिक्षण शास्त्रिय अभ्यास में सुधार कर आगे अधिगम को बढ़ा सकें।

छात्राध्यापक (इंटर्न) को सामान्य तथा विषयवार पर्यवेक्षण के लिए संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षी समर्थन (सुपरवाइजरी सपोर्ट) की आवश्यकता होगी। ये विषय विशेषज्ञ इंटर्न का आकलन भी करेंगे। उचित गतिविधियों का चयन करते हुए इंटर्न को इकाई योजना का निर्माण करना चाहिये। इन योजनाओं का रिकार्ड संधारित करना होगा। प्रत्येक इंटर्न से आशा की जाती है कि वे नियमित रिफ्लेक्टीव जर्नल संधारित करे, जिसमें वे अपने अभ्यास के अनुभवों पर प्रतिक्रिया देते तथा शिक्षणशास्त्र एवं अध्ययन किये गये सैद्धांतिक विषयों के बीच संबंध (linkage) बना सके।

द्वितीय वर्ष

इंटर्नशिप उन कक्षाओं के अवलोकन से प्रारंभ होगी जहाँ इंटर्न को पढ़ाने जाना है। अवलोकन छात्रों की रूचि, आवश्यकताओं एवं स्तरों के साथ–साथ कक्षा के अभ्यास और उपयोग की गयी सामग्रियों का किया जाना है। सुपरवाईज़र के साथ चर्चा तथा जर्नल का अभिलेखीकरण अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग है।

इन अवलोकनों के आधार पर तथा रचनावाद पर आधारित कुछ अवधारणाओं का उपयोग करते हुये योजना बनायें। सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम उद्देश्यों का स्पष्ट निर्माण करें साथ ही किस प्रकार अधिगम को संगठित किया जायेगा इसका विस्तृत वर्णन करें जैसे– चर्चा का तरीका, छोटे समूह या व्यक्तिगत कार्य। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्व–अधिगम के माध्यम से आकलन करते हुये सम्मिलित रहते हैं।

लोकतांत्रिक नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी की स्वायत्ता बढ़ती है और सभी विद्यार्थियों के साथ सम्मान और निष्पक्षता का व्यवहार होता है।

सुपरवाईज़र इन क्षेत्रों पर अपना फिडबैक दे।

- इंटर्न के ज्ञान का आधार।
- जीवन के अनुभव पर आधारित विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान से संबंधित सार्थक प्रश्नों को पूछना।
- विभिन्न आवश्यकताओं के आधार पर उचित अनुदेशात्मक रणनीतियों पर प्रतिक्रिया करना।
- सभी विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव की इस प्रकार सुविधा देना जिससे उनमें समालोचनात्मक चिंतन, चयन और अंतः क्रिया को बढ़ावा मिले और विषयों की स्वयत्ता बनी रहे।
- अधिगमकर्ता की पाठ्यपुस्तकों, शिक्षकों, नोट्स पर निर्भरता को कम करते हुये वैकल्पिक स्त्रोतों का संदर्भ देना चाहिये। जैसे– राहपाटी, किताबें, इन्टरनेट इत्यादि।
- समय का सदुपयोग करें।
- डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम और कक्षा अवलोकन के बीच संबंध स्थापित करें।

सुपरवाईजर की भूमिका–

एक सुपरवाईजर 4–6 विद्यार्थियों के मध्य काम करेगा। उपरोक्त निर्देशों के अतिरिक्त पार्टनर शाला के साथ लगातार बातचीत करेगा। इंटर्न को समस्याओं की पहचान करा कर–सृजनात्मक समाधान के लिए प्रेरित करेगा ताकि वह शाला की सामर्थ और सीमाओं को पहचान कर नये–नये विचारों के साथ समझौता करना सीखें। इंटर्न द्वारा एक अस्थायी रिवाज़ के लिए इंटर्नशिप अवधि को कम करना तथा शाला को प्रयोगशाला की तरह उपयोग करने की भावना छोड़नी होगी तभी इंटर्न को प्रोत्साहन मिलेगा।

सुपरवाइजर कक्षा में बगैर बाधा के जल्दी पहुँचकर कक्षा के विस्तृत संदर्भ को समझाने के लिए यह देखे की इंटर्न किस प्रकार विद्यार्थियों को कार्य में संलग्न कर रहा है। फीडबैक तुरंत जितनी जल्दी हो सके दिया जाना चाहिए और दी गयी टिप्पणी पर कार्य करने के लिये इंटर्न को प्रोत्साहित करना चाहिये।

शाला सुपरवाईजर को प्राथमिक में 05 बार तथा माध्यमिक में 02 बार जाना चाहिये।

विषय विशेषज्ञ को 02 बार प्राथमिक तथा 02 बार माधमिक में जाना चाहिये।

जर्नल्स्–

जर्नल्स के अंतर्गत कुछ अंश विवरण का एवं ज्यादा अंश चिन्तन एवं विश्लेषण का होना चाहिये। विवरण प्रत्येक विद्यार्थि पर, शिक्षण शास्त्र पर, प्रबधन के मुद्दों पर, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मुद्दों पर केन्द्रित होना चाहिये।

अधिकतम अंक = 15

इंटर्न ने कक्षा में क्या और क्यों किया इस प्रतिक्रिया पर विश्लेषण आधारित होगा। उदाहरणार्थ–क्या इंटर्न बच्चों को विकास के सिद्धांत के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव के साथ भी संलग्न कर रहा है? इस समय अवधि के दौरान इंटर्न को प्रगति पर पूरा फोकस होना चाहिये। उदाहरणार्थ–सुपरवाईज़र की टिप्पणीयों पर प्रतिक्रिया करनी चाहिये, और गुणात्मक सुधार नियमित जर्नल में प्रस्तुत करना चाहिये इत्यादि।

अधिकतम अंक = 25

नोटः– इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक (इंटर्न) मंगलवार से लेकर शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा और सोमवार को अपने सुपरवाईज़र के साथ, सप्ताहांत में बनाई गयी पाठ्ययोजनाओं पर फीड बैक और मार्गदर्शन लेगा और इस आधार पर पुनः मंगलवार से शुक्रवार तक शिक्षण कार्य करेगा। यह चक्र संपूर्ण इंटर्नशिप अवधि के दौरान जारी रहेगा।